अप्रैल–जून 2021

जयपुर अंचल की त्रैमासिक पत्रिका

मरु सृजन

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

विजया VIJAYA | देना DENA

राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति, राजस्थान की 149वीं बैठक

राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति, राजस्थान की 149वीं बैठक श्री विक्रमादित्य सिंह खीची, कार्यपालक निदेशक, बैंक ऑफ बड़ौदा की अध्यक्षता में वीसी के माध्यम से दिनांक 25.06.2021 को आयोजित की गई। बैठक में श्री भास्कर ए. सावंत, प्रमुख शासन सचिव, कृषि एवं उद्यानिकी, राजस्थान सरकार, श्री नवीन जैन, शासन सचिव, आयोजना, राजस्थान सरकार, श्री अशोक कुमार डोगरा, निदेशक, वित्तीय सेवाएँ विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार, डॉ. ओमप्रकाश, आयुक्त, कृषि, राजस्थान सरकार, श्री सीता राम जाट, संयुक्त शासन सचिव, राजस्व विभाग, राजस्थान सरकार, श्री अरुण कुमार सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय रिज़र्व बैंक, श्री जयदीप श्रीवास्तव, मुख्य महाप्रबन्धक, नाबार्ड, श्री अमिताभ चटर्जी, मुख्य महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक, श्री महेंद्र सिंह महनोत, संयोजक, राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति, व महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा, श्री मुकेश कुमार, महाप्रबंधक, भारतीय रिजर्व बैंक तथा राज्य सरकार एवं भारत सरकार के विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारीगण, भारतीय रिजर्व बैंक, नाबार्ड, सिडबी, विभिन्न बैंकों, बीमा कम्पनियों व वित्तीय संस्थाओं के कार्यपालकों/ अधिकारियों द्वारा सहभागिता की गयी.

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय सहयोगियो,

अंचल की पत्रिका मरू सृजन के माध्यम से आप सभी से संवाद करने में मुझे हमेशा अत्यंत प्रसन्नता होती है। हर्ष का विषय है कि वित्तीय वर्ष 2021–22 के जून तिमाही की समाप्ति के दौरान हमारे अंचल का कार्यनिष्पादन उत्कृष्ट रहा, इस आशय हेतु मैं अंचल के सभी स्टाफ़ सदस्यों की लगन व मेहनत के लिए साधुवाद देता हूँ एवं अभिनंदन करता हूँ।

विगत तिमाही में अंचल ने मांग जमा, बचत जमा, कासा जमाराशियों में वृद्धि, खुदरा ऋण, कुल अग्रिम, कृषि अग्रिम, बी के सी सी, गोल्ड लोन, एम एस एम ई लोन संवितरण व एन पी ए वसूली आदि क्षेत्रों में बेहतरीन कार्य किया है। अंचल के इस कार्यनिष्पादन को हमें भविष्य में भी बरकरार रखना है। इसके अलावा डिजिटल बैंकिंग व डब्यू एम एस एवं सरकारी कारोबार के विभिन्न पैरामीटरों में अंचल का कार्यनिष्पादन अखिल भारतीय स्तर पर सराहनीय रहा। मेरा अंचल के सभी साथियों से अपील है कि आगामी समयावधि में भी इन सभी कार्यनिष्पादन को उत्कृष्ट दिशा की ओर जारी रखेंगे ताकि अंचल सहित बैंक का सर्वांगीण विकास संभव हो सके।

चूंकि यह समय परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है, इसलिए अनुरोध है कि बैंकिंग के नए आयामों एवं परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए सदैव गुणवत्तापूर्ण ऋण वितरण, कासा जमाराशियों में लगातार वृद्धि, डिजिटल लेंडिंग प्लैटफ़ार्म के माध्यम से व्यवसाय वृद्धि तथा डब्ल्यू एम एस एवं सरकारी कारोबार के विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु लगातार प्रयास बैंक द्वारा निर्धारित नीति–नियमों के अनुपालन के साथ करें ताकि हम उच्च प्रबंधन द्वारा प्रदत्त लक्ष्य की प्राप्ति कर सकें।

मेरा आप सभी से अनुरोध है कि एक पथिक की भांति अपने लक्ष्य की ओर लगातार गतिमान रहें और अपने प्रयासों में सफल हों, इसी विश्वास के साथ कि –

कामयाबी के सफ़र में मुश्किलें तो आएँगी ही
परेशानियाँ दिखाकर, तुमको तो डराएंगी ही,
चलते रहना कि कदम रुकने ना पाएं
अरे मंज़िल तो मंजिल ही है, एक दिन तो आएगी ही

आपका

(महेन्द्र सिंह महनोत)
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

उप अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय साथियो,

अंचल की पत्रिका मरु सृजन के माध्यम से आप सभी से संवाद करने में अत्यंत खुशी हो रही है। विगत तिमाही में जयपुर अंचल द्वारा विभिन्न लक्ष्यों जैसे-कासा जमाराशियों, थर्ड पार्टी प्रोडक्टस, सरकारी कारोबार के विभिन्न मानदंडों, डिजिटल उत्पाद, विभिन्न खुदरा ऋण, एम एस एम ई ऋण, कृषि ऋण, एन पी ए वसूली की न केवल प्राप्ति की गई, अपितु इन सब क्षेत्रों में अंचल का कार्यनिष्पादन बेहतरीन रहा।

इन सभी उपलब्धियों के लिए मैं अंचल के सभी स्टाफ़ सदस्यों का अभिनंदन करता हूँ व भविष्य में भी इसी ऊर्जा व उत्साह के साथ कार्य करने की अपील करता हूँ।

साथियो, जहां हमें बैंक के उच्च प्रबंधन द्वारा प्रदत्त सभी व्यावसायिक लक्ष्यों की पूर्ति करनी है वहीं अनुपालन की दृष्टिकोण से भी हर पल सजग रहते हुए कार्य करना है। मेरा आप सभी से अनुरोध है कि शाखा के नकदी जमा शेष, खाली लॉकर्स की नियमित रूप से मॉनिटरिंग की जाए। के वाई सी/ए एम एल विभाग, बी सी एस बी आई एवं बैंक के सतर्कता व अन्य विभागों द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का शत-प्रतिशत अनुपालन किया जाए ताकि किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी से बचा जा सके। आप अवगत ही हैं कि बैंक जैसे व्यावसायिक संस्था में ग्राहक सेवा का महत्व अत्यंत महत्वपूर्ण है, इस संबंध में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का कथन सटीक है कि-ग्राहक आपके परिसर में आने वाला अति महत्वपूर्ण आगंतुक है। वह हमारे कार्य में बाधक नहीं है क्योंकि उसके आगमन का एक उद्देश्य है, उसकी सेवा करके हम उस पर अनुग्रह नहीं कर रहे हैं बल्कि वह ऐसा करने का अवसर देकर हमें अनुग्रहित कर रहा है।

राष्ट्रपिता की इस उक्ति को ध्यान में रखते हुए आइए हम सब अंचल में आदर्श ग्राहक सेवा की संस्कृति पर ध्यान केन्द्रित करें ताकि शिकायत की स्थिति ही निर्मित न हो पाए।

मैं पुनः अंचल के सभी स्टाफ़ सदस्यों को विगत तिमाही में अर्जित उपलब्धियों पर बधाई देता हूँ और अपील करता हूँ कि बैंक के उच्च प्रबंधन एवं भारत सरकार द्वारा प्रदत्त लक्ष्यों की पूर्ति हेतु शत-प्रतिशत नीतिपूर्ण कार्य निष्पादन कर अंचल को उन्नति के शिखरों में विराजित करने में अपना भरपूर सहयोग करें।

शुभकामनाओं सहित,

आपका

(आर सी यादव)
उप महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

संरक्षक

श्री महेन्द्र सिंह महनोत
अंचल प्रमुख,
जयपुर अंचल

श्री आर सी यादव
उप अंचल प्रमुख,
जयपुर अंचल

श्री प्रदीप कुमार बाफना
उप महाप्रबंधक (नेटवर्क),
जयपुर अंचल

श्री बी एल मीणा
उप महाप्रबंधक (नेटवर्क),
जयपुर अंचल

परामर्श

श्री संतोष कुमार बंसल
क्षेत्रीय प्रमुख, जयपुर क्षेत्र

श्री एस. के. बिरानी
क्षेत्रीय प्रमुख, अजमेर क्षेत्र

श्री योगेश यादव
क्षेत्रीय प्रमुख, बीकानेर क्षेत्र

श्री अनिल कुमार माहेश्वरी
क्षेत्रीय प्रमुख, उदयपुर क्षेत्र

श्री मुकेश कुमार जैन
क्षेत्रीय प्रमुख, बांसवाड़ा क्षेत्र

श्री राजेश कुमार शर्मा
क्षेत्रीय प्रमुख,
अलवर क्षेत्र

श्री मुकेश मेहरा
क्षेत्रीय प्रमुख, कोटा क्षेत्र

श्री सुरेश बूंटोलिया
क्षेत्रीय प्रमुख, जोधपुर क्षेत्र

श्री सुरेश कुमार खटोर
क्षेत्रीय प्रमुख, भीलवाड़ा क्षेत्र

श्री एस आर मीणा
क्षेत्रीय प्रमुख, भरतपुर क्षेत्र

श्री बी एल सुंडा
क्षेत्रीय प्रमुख, झुंझुनू क्षेत्र

श्री वी. सी. जैन
क्षेत्रीय प्रमुख,
सवाईमाधोपुर क्षेत्र

संपादक

श्री सोमेन्द्र यादव
मुख्य प्रबन्धक, (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, जयपुर

संपादकीय सहयोग

श्री जयपाल सिंह शेखावत
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा),
जयपुर क्षेत्र

श्री ओमप्रकाश मीणा
प्रबंधक (राजभाषा), भीलवाड़ा क्षेत्र

श्रीमती ज्योति अग्रवाल
प्रबंधक (राजभाषा),
सवाईमाधोपुर क्षेत्र

श्रीमती भारती प्रतिहार
प्रबंधक (राजभाषा), उदयपुर क्षेत्र

संपादकीय सहयोग

श्री अंबरीष वर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), जोधपुर क्षेत्र

सुश्री अंकेश कुमारी
प्रबंधक (राजभाषा), भरतपुर क्षेत्र

श्री मनीष व्यास
प्रबंधक (राजभाषा), अजमेर क्षेत्र

श्रीमती अनीता
प्रबंधक (राजभाषा), बीकानेर क्षेत्र

श्री अतुल जैन
राजभाषा प्रभारी, कोटा क्षेत्र

संपादकीय

अंग्रेज़ी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषाज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।।

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध रचनाकार एवं नाटककार भारतेन्दु हरिश्चंद्र की कविता निज भाषा की ये पंक्तियाँ बताती हैं कि हम चाहे विदेशी भाषाओं में कितने ही प्रवीण क्यूँ न हो जाएँ, निज भाषा के ज्ञान के बिना एक अधूरापन हमेशा हमारे मन को खलता ही है। हम सभी बैंकिंग से जुड़े हुए हैं और हमारे बैंक की बहुत सारी शाखाएँ ग्रामीण और अर्द्ध शहरी परिवेश में स्थित है जहां के लोग अभी भी अंग्रेजी के प्रयोग में सहज नहीं है। ऐसे में, ग्राहकों के साथ एक कनैक्ट स्थापित करने की हमारी कवायद भाषाई द्वंद्व में फंस कर रह जाती हैं। अतः समय की ये मांग है कि इन केन्द्रों पर कार्यरत शाखाओं में पदस्थ स्टाफ़ सदस्य इस बात को समझें कि हिन्दी ही, विशेकर 'क' क्षेत्र में, ऐसा भाषाई माध्यम है जो हमें ग्राहकों से 'वो' कनैक्ट स्थापित करने और व्यवसाय संवर्धन हेतु नई लीड्स के संग्रहण में मदद कर सकती है।

'मरु-सृजन' का यह अंक आपको समर्पित है। पत्रिका के इस अंक में हमने **'कैशलेस इंडिया', 'म्यूचुअल फ़ंड', 'कोरोना के बाद अर्थव्यवस्था'** जैसे प्रासंगिक बैंकिंग आलेख सम्मिलित किए हैं, वहीं **'सोशल मीडिया की महत्ता'** और **'ज़िंदगी को नहीं जीवन को जिएँ'** जैसे उपयोगी आलेखों को भी स्थान दिया है। इनके अतिरिक्त, सभी क्षेत्रों की व्यावसायिक एवं राजभाषाई गतिविधियों को भी प्रमुखता से प्रकाशित किया गया है। पत्रिका को बेहतर बनाने हेतु आपके सुझावों का सादर स्वागत है, हमें अपनी टिप्पणियाँ rajbhasha.rzbankofbaroda.com पर अवश्य प्रेषित करें।

सादर

सोमेन्द्र यादव
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

अंचल प्रमुख का संदेश	1
उप अंचल प्रमुख का संदेश	2
संपादकीय	3
महामारी के दौर में अर्थव्यवस्था पर उभरता संकट	4-5
नकदी रहित भारत (कैशलेस इंडिया) : फायदे एवं नुकसान	6
म्युचुअल फंड : निवेश के लिए जानकारी अनिवार्य है	7-9
जीवन को नही, ज़िन्दगी को जिएं...!	10-11
सोशल मीडिया की महत्ता	12-13
कविताएं	14
व्हाट्सऐप बैंकिंग	15
योग	16-17
कृषि ऋण माफी	18-20
मौन सशक्त अभिव्यक्ति है	21-22
सर्वोच्च स्थान : सीलोरा शाखा, अजमेर	23
क्या आप जानते हैं?	24
बैंक के विकास में हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं की भूमिका	25-27
अंचलिक गतिविधियां	28-30
राजभाषा संबंधी गतिविधियां	31-32

सम्पर्क :
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
अंचल कार्यालय, जयपुर अंचल
बड़ौदा भवन, प्लॉट नं. 13, एयरपोर्ट प्लाजा,
दुर्गापुरा, टोंक रोड, जयपुर-302018
rajbhasha.rz@bankofbaroda.com

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, बैंक का उनसे सहमत होना जरूरी नहीं है।

महामारी के दौर में अर्थव्यवस्था पर उभरता संकट

गत वर्ष कोरोना महामारी सम्पूर्ण मानव प्रजाति के लिए एक ऐसा विकराल संकट लेकर प्रकट हुई जिससे असंख्य व्यक्ति इस महामारी के चलते अकाल मृत्यु की भेंट चढ़ गए। सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था इस महामारी की चपेट में आकर न केवल आहत हुई अपितु सभी प्रकार के वैश्विक व्यवसाय पूरी तरह से ठप्प पड़ गए। जहां तक भारतीय अर्थव्यवस्था का सवाल है, हम भली भांति जानते हैं कि महामारी से पूर्व अर्थात वित्तीय वर्ष 2019 स्वयं में एक धीमी विकास दर वाला वर्ष रहा था जिसके दौरान व्यापार के क्षेत्र में न केवल उतार महसूस किया गया अपितु उत्पादन पर बहुत ही बुरा असर देखा गया था। जिसके चलते ऑटो एवं अन्य कई क्षेत्रों में लाखों की संख्या में लोग बेरोजगार हो गए थे।

आर्थिक मंदी से जूझ रही भारतीय अर्थव्यवस्था में कोरोना महामारी का पदार्पण बहुत ही घातक स्थिति को लेकर प्रकट हुआ। महामारी के भारत में प्रवेश करते ही जन मानस में एक हाहाकार की स्थिति एवं भय का समावेश खुद में एक विपन्न स्थिति लेकर आया। राजनैतिक दृष्टिकोण एवं देश में तेज़ी से फैलते हुए संक्रामण को देखते हुए माननीय प्रधान मंत्री जी द्वारा पूरे देश में त्वरित रुप से लॉक डाउन की घोषणा की गयी ताकि देश के नागरिकों को सुरक्षित रखा जा सके। इस कदम के उठते ही, सभी प्रकार के सरकारी एवं गैर सरकारी प्रतिष्ठान पर पूर्णरूपेण विराम लग गया। चूंकि अर्थव्यवस्था पहले से ही धीमी गति की विकास दर से उबरने की कोशिश कर रही परंतु इस विराम के लगते ही, इसकी कमर पूरी तरह से टूट गयी।

देश में खाद्य पदार्थों, दवाओं एवं आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन को छोड़ अन्य सभी प्रकार के कल-कारखाने बंद करने पड़े जिससे न केवल बेरोजगारी की गंभीर स्थिति अपितु व्यावसायिक दर सबसे निचले स्तर-40.00% को छू गयी। सभी प्रकार के व्यवसाय बंद होने से मुद्रा का संचालन एवं दोहन न केवल समाप्ति की ओर चला गया बल्कि यह मान लिया गया कि अब अर्थव्यवस्था को उबार पाना खुद में एक सबसे बड़ी चुनौती है।

हम सभी जानते हैं कि जीडीपी के निर्धारण एवं उसमें वांछित गति और वृद्धि उत्पादन एवं उपभोग दोनों पर टिकी होती है, जब उत्पादन पर पूर्ण विराम आरोहित हो जाएं तो जीडीपी को वृद्धि के तल को छूने से कोई भी नहीं रोक सकता है। यह पूर्ण विराम इतना घातक था कि लगभग 14 करोड़ लोग रोजगार से हाथ धो बैठे। महामारी के पहले तीन सप्ताह प्रतिदिन अर्थव्यवस्था को रु. 21000 करोड़ से नीचे लाते रहे जिसका परिणाम यह निकला कि अर्थव्यवस्था में कुल व्यवसाय 53 प्रतिशत से नीचे चला गया।

भारत सरकार को त्वरित रूप से सहायता पैकेज की घोषणा करनी पड़ी ताकि अर्थव्यवस्था को इस घोर आर्थिक मंदी से उबारा जा सके। भारत सरकार ने बीस लाख करोड़ रुपये के पैकेज की न केवल घोषणा की अपितु गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत करने वाली एक बड़ी आबादी के बचत खातों में रु. 1500 तीन चरणों में अंतरित किए ताकि जनमानस के रोजगार से वंचित होने की स्थिति में भी उनको जीवन यापन की मूलभूत सुविधाएं अर्थात राशन-पानी प्राप्त करने में सुलभता हो।

हमारी अर्थव्यवस्था में उद्योग जगत तो मानो महामारी के इस महासागर में डूब सा ही गया, कई बड़ी कंपनियों में उत्पादन बंद होने की स्थिति में कर्मचारियों की गणना में छटनी करनी पड़ गयी जिसके चलते लाखों की संख्या में लोग बेरोजगार हो गए। कुछ क्षेत्र जैसे कि ऑटो सैक्टर, स्टील, टूरिज्म एवं होटल इंडस्ट्री तो इतनी बुरी तरह से आहत हुई कि इनके मालिकों को लिए गए कर्ज़ की अदाएगी जहर खाने की स्थिति की ओर ले गयी। भारतीय रिजर्व बैंक ने भी आगे आकार सहायता पैकेज की घोषणा की जिसके चलते एसएमई क्षेत्र की इकाईयों को बैंक के माध्यम से त्वरित क्रेडिट लाइन प्रदान की गयी ताकि उनको

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

जीवित रखा जा सके एवं साथ ही साथ लिए गए आवधिक लोन में स्थगन (मोरेटोरियम) भी प्रदान करना पड़ा। सभी प्रकार के विकल्पों को तलाशा गया ताकि व्यवसाय जगत को किसी भी प्रकार से जीवित रखा जा सके ताकि महामारी के अंत के पश्चात उद्योग जगत को पुनः खड़ा किया जा सके। परंतु इतने प्रयासों के बाद भी अर्थव्यवस्था की टूटी हुई इस कमर को जोड़ पाना मानो एक असंभव सा कार्य प्रतीत होता दिखाई दिया।

गत वर्ष खुद में एक कोहराम लेकर आया जिसने न केवल मानव प्रजाति को बुरी तरह से आहत किया अपितु अर्थव्यवस्था में ऐसे घाव ला दिये हैं जिनको भर पाना आने वाले कुछ वर्षों में भी शायद ही संभव हो। अभी हम इससे उबरे ही नहीं थे कि कोरोना की अत्यंत घातक दूसरी लहर हमारे देश में प्रकट हो गयी। मजबूरन फिर से एक बार देश में विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा लॉक डाउन लगाना पड़ा, लेकिन इस बार यह ध्यान रखा गया कि सभी क्षेत्र बुरी तरह से प्रभावित न हो और धीमी गति से ही सही अर्थव्यवस्था में गति तो बनी ही रहे ताकि देश को घोर संकट की घड़ी में से धीरे-धीरे उबारा जा सके।

चूंकि अब भारत सरकार द्वारा देशव्यापी टीकाकरण किया जा रहा है, जिससे जन मानस को इस वायरस से लड़ने की शक्ति प्रदान होगी एवं अकाल मृत्यु की स्थिति पर रोक लगाई जा सकेगी। इसका सीधा परिणाम हमारे दैनिक जीवन पर पड़ेगा जिसके फलस्वरूप लॉक डाउन हटा पाने में सफलता प्राप्त हो सकेगी और सभी कारोबार फिर से अपनी पटरी पर चल पड़ेंगे। हालांकि विकास की वांछित दर जोकि कम से कम 6 से 8 प्रतिशत के बीच में आँकी जाती है उससे हमारी अर्थव्यवस्था अभी भी मीलों दूर खड़ी दिखाई देती है। यह एक ऐसा संकट है जोकि त्वरित परिणाम तो ला ही रहा है परंतु इसके दीर्घ परिणाम चिर काल तक विद्यमान रहेंगे।

हमारे निर्यात और आयात दोनों ही पूर्ण रूप से ठप्प पड़े हैं। अब जब आयात ही संभव नहीं है तो वे सभी वस्तुएं जोकि देश में उत्पादन को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं, न तो आ पाएँगी और न ही हम उत्पादन करके निर्यात कर पाएंगे। दोनों ही स्थिति में अर्थव्यवस्था न केवल लाचार अपितु चरमराती ही दिखाई देती है। अभी ज़रूरत है कि देश में सरकार सहित अभी नागरिक महामारी के दौरान आरोपित

कोविड-19 के दिशानिर्देशों का शत प्रतिशत अनुपालन एवं टीकाकरण करवाएँ ताकि मानव जीवन को पूर्व की भांति स्थापित किया जा सके। इसके पश्चात भी व्यवसाय में वृद्धि संभव हो सकेगी।

कोई भी व्यवसाय जनमानस द्वारा एवं जनमानस के लिए ही होता है और इसका विकास जनमानस के हाथों में ही संभव है। सरकार जितनी भी नीतियाँ बना ले परंतु उसका निर्वहन तभी संभव है जब शत प्रतिशत अनुपालन हो। हमें आशा है कि हमारी अर्थव्यवस्था शीघ्र ही पटरी पर दुबारा चल पड़ेगी पर इसके लिए हमें अथक प्रयास करने पड़ेंगे।

यह मान लेना पड़ेगा कि देश और उद्योग जगत तभी दुबारा खड़ा हो पाएगा जब उद्योग जगत आर्थिक रूप से सुदृढ़ होगा और उत्पादन एवं उपभोग दोनों तीव्र गति से चलेंगे ताकि घरेलू खपत के साथ-साथ हम अन्य देशों को निर्यात करके विदेशी मुद्रा का अर्जन कर सकें ताकि वो सभी सेवाएँ एवं वस्तुएं अन्य देशों से खरीदी जा सकें जिनके उत्पादन में हम सक्षम नहीं हैं। ऐसा संभव है बस आशा मन में बनाए रखनी होगी और मौद्रिक एवं व्यापारिक नीतियों को तीव्र विकास की दर की ओर आरोपित करना होगा।

शिशिर सक्सेना
मुख्य प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर

नकदी रहित भारत (कैशलेस इंडिया) : फायदे एवं नुकसान

नकदी रहित अर्थव्यवस्था से मतलब उस अर्थव्यवस्था से है, जिसमें नकदी का प्रवाह अस्तित्वहीन हो और सभी लेन-देन प्रत्यक्ष रूप से यानि डेबिड कार्ड, क्रेडिट कार्ड, इलेक्ट्रॉनिक क्लियरिंग व भुगतान प्रणाली जैसे, तत्कालीन भुगतान सेवा **(आई.एम.पी.एस.)**, नैशनल इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर **(एन.ई.एफ.टी.)**, रियल टाइम ग्रॉस सैटलमेंट **(आर.टी.जी.एस.)** इत्यादि से हो। नकदी रहित अर्थव्यवस्था एक मिशन है, जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत सरकार ने शुरू किया है। इस मिशन का उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था की नकदी पर निर्भरता को कम करना है।

अभी तक भारत में इसका स्तर अकादमिक स्तर तक रहा है। बाजार हो या शॉपिंग मॉल सभी जगह नगदी का ज्यादा इस्तेमाल होता है। नगदी के इस्तेमाल में नकदी से सकल घरेलू उत्पाद **(जी.डी.पी.)** का अनुपात लगभग 12% है, जो कि चीन में 9% तथा ब्राजील में 4% से बहुत पीछे हैं। स्वीडन दुनिया का पहला कैशलेस देश है।

इस मिशन की शुरुआत 15 अगस्त 2014 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने प्रधानमंत्री जन-धन योजना **(पी.एम.जे.डी.वाई.)** की घोषणा के साथ की। इस योजना के पहले दिन 1.5 करोड़ खाते खोले गए। यह योजना **'मील का पत्थर'** साबित हुई है। अभी हाल ही में 8 नवंबर 2016 के विमुद्रीकरण के क्रांतिकारी फैसले ने इस मिशन में नई ऊर्जा प्रदान की है। नए नोटों की कमी के कारण डिजिटल ट्रांजेक्शन को बढ़ावा मिला है, जिससे लोग बैंक में एटीएम की लंबी कतारों में खड़े होने से बच सके हैं। सरकार भी यही चाहती है कि अधिक से अधिक लोग डिजिटल माध्यम से लेन देन करें, क्योंकि डिजिटल माध्यम पर निगरानी रखी जा सकती है।

दूरसंचार में स्मार्टफोन का विस्तार निकट भविष्य में डिजिटल बदलाव प्रदान करेगा। निजी क्षेत्र इस बदलाव का केंद्र हो सकता है। सरकार इलेक्ट्रॉनिक ट्रांसफर को बढ़ावा देने के लिए सभी डिपार्टमेंट का डिजिटलाइजेशन कर रही है।

नकदी रहित होने से कालाधन, भ्रष्टाचार, कर-चोरी तथा रियल स्टेट मूल्यवर्धन रूकने के साथ-साथ, नोटों की छपाई पर लगने वाला खर्च, नोटों को एक जगह से दूसरी जगह पर ले जाने का खर्च, जाली नोटों की परेशानी से मुक्ति मिल सकती है।

इस मिशन में आने वाली बाधाएं भी कम नहीं हैं। इन बातों में इंटरनेट की धीमी गति, साइबर सुरक्षा, लोगों में दुकानदार द्वारा ज्यादा चार्ज करने का डर, वित्तीय साक्षरता, जागरूकता की कमी, नेटवर्क कवरेज इत्यादि है।

नकदी रहित होने से नुकसान भी बहुत है। जिस स्थान पर नेटवर्क कवरेज, इंटरनेट की सुविधा नहीं है, वहां सभी कार्य नकदी से संपन्न होते हैं। पं. दीनदयाल ग्राम ज्योति योजना के बाद भी गाँवों में बिजली की समस्या है तथा बहुत स्थान ऐसे हैं, जहां बिजली इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी है, वहां नकदी रहित मिशन विफल हो जाता है। वित्तीय साक्षरता की कमी के कारण लोग क्राइम का शिकार हो सकते हैं। नकदीरहित होने से ऑनलाइन वस्तु खरीदने पर ऑनलाइन भुगतान होने पर वस्तु की गुणवत्ता में धोखा हो सकता है तथा कुरियर अलग से देय होता है, जो कि बाजार से अतिरिक्त खर्च होता है।

सरकार ने एकीकृत भुगतान इंटरफेस **(यू.पी.आई.)** भारत इंटरफेस फॉर मनी **(भीम)**, आधार सक्षम भुगतान प्रणाली **(ए.ई.पी.एस.)** व ई-पर्स के विभिन्न अनुप्रयोगों से नकदी रहित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में कदम दर कदम वृद्धि दर्ज की गई है।

आर.बी.आई., छोटे बैंकों, पैमेंट बैकों को अधिक लाइसेंस देकर सरकार के इस कदम में मदद कर सकता है। सरकार एफ.डी.आई. कानून में ढ़िलाई देकर, सर चार्ज व सर्विस चार्ज हटाकर बैंक में खोले गए खातों को सक्रिय रखने के लिए लोगों को जागरूक कर, इलेक्ट्रॉनिक लेन-देन को सुरक्षित बनाकर, ऑनलाइन और कार्ड लेन-देन में फीस कम कर तथा ए.टी.एम. निकासी पर चार्ज लगाकर व वित्तीय साक्षरता प्रदान कर नकदीरहित भारत का निर्माण कर सकता है।

अंकित सुनेजा
संकाय सदस्य
बड़ौदा अकादमी, जयपुर

म्युचुअल फंड : निवेश के लिए जानकारी अनिवार्य है

म्युचुअल फंड क्या है ?

म्यूचुअल फंड एक इन्वेस्ट करने का तरीका है, जो मूल रूप से स्टॉक या बॉन्ड का कलेक्शन करते है जो कि एसेट मैनेजमेंट कंपनियों के प्रोफेशनल्स द्वारा मैनेज किया जाता है। ग्राहक द्वारा अपना पैसा विभिन्न प्रकार की म्यूचुअल फंड यूनिट्स में अपनी रिस्क और इन्वेस्ट के समय के आधार पर लगाया जाता है।

बहुत सरल शब्दों में, आप ये कह सकते हो कि म्यूचुअल फंड एक कंपनी की तरह है जिसमे बहुत से लोगो का एक समूह साथ मे आता है और अपने पैसो के इन्वेस्टमेंट करता है प्रत्येक इन्वेस्टर म्यूचुअल फंड में अपने शेयरों का मालिक होता है जो अपने होल्डिंग्स के एक हिस्से को रिप्रेजेंट करता है।

एक म्यूचुअल फंड में इन्वेस्ट करना स्टॉक के शेयरों में इन्वेस्ट करने से अलग होता है। स्टॉक के विपरीत म्यूचुअल फंड अपने शेयर होल्डर्स को किसी प्रकार की वोटिंग अधिकार नहीं देते हैं। म्यूचुअल फंड केवल एक होल्डिंग में इन्वेस्ट करने की बजाय कई अलग–अलग स्टॉक (या अन्य सिक्युरिटीट्स) में इन्वेस्ट को रिप्रेजेंट करता है। प्रत्येक म्यूचुअल फंड में एक या एक से अधिक फंड मैनेजर होते हैं, जो निवेशको के इनवेस्टमेंट को देखता है।

अलग अलग प्रकार के म्यूचुअल फंड क्या हैं जिनमें इन्वेस्ट कर सकते हैं–

इन्वेस्टमेंट के उद्देश्यों के आधार पर	प्लान के प्रकार के आधार पर	मैच्युरिटी पीरियड के आधार पर
1. इक्विटी स्कीम्स ये स्कीम इन्वेस्टर्स के द्वारा लगाए गए पैसे को स्टॉक मार्केट में इन्वेस्ट करती है इक्विटी म्यूचुअल फंड में रिस्क का स्तर काफी अधिक होता है और इन्वेस्टर्स को सलाह दी जाती है कि वे सभी प्रकार की रिस्क को देख कर ही अपने इन्वेस्टमेंट करने की क्षमता के आधार पर ही इन्वेस्ट करे । SEBI (Securities and Exchange Board of India) ने मार्केट कैपिटलाइजेशन के आधार पर इन तीन श्रेणियों को परिभाषित किया है। लार्ज कैप: मार्केट कैपिटलाइजेशन में टॉप 100 कम्पनीज मिड कैप: मार्केट कैपिटलाइजेशन में 101 से 250 कम्पनीज स्मॉलकैप : मार्केट कैपिटलाइजेशन मे वार्डस पर 251 वी **2. डेबेट स्किमस** इन प्रकार के म्यूचुअल फंड ज्यादातर डेब्ट इन्एट्रमेंट्स में इन्वेस्ट करते हैं, जैसे कॉरपोरेट बॉन्ड, गवर्नमेंट बॉन्ड, बैंकों द्वारा जारी बांड इत्यादि। ये म्यूचुअल फंड उन इनवेस्टर्स के लिए सबसे अच्छे हैं जो कम रिस्क लेना चाहते हो। SBEI ने डेब्ट स्किम के तहत कुल 16 कैटेगरी को शामिल किया है। **3. हाइब्रिड स्किम्स** हाइब्रिड स्किम्स में डेब्ट और इक्विटी दोनों में और अन्य संबंधित इन्एमेंट्स में पैसे का इन्वेस्टमेंट होता है ये विविधता से भरे हुए म्यूचुअल फंड हैं जिनके पास इंवेसमेन्ट पर रिस्क और रिटर्न के बीच एक बहुत सही संतुलन होता है और इन दिनों ये सबसे लोकप्रिय म्यूचुअल फंड हैं। SEBI द्वारा हाइब्रिड स्कीम के तहत 7 कैटेगरी दी गई हैं।	**1.डाइरेक्ट प्लान म्यूचुअल फंड** वे म्यूचुअल फंड जहां एसेट मैनेजमेंट कंपनियां (AMC) डिस्ट्रिब्यूटर एक्सपेंसिस, ट्रेल फीस और ट्रांजेक्शन चार्ज नहीं लेती हैं। उनका एक्सपेंस रेश्यो बहुत कम है। इसका मतलब है कि, एक इन्वेस्टर के रूप में, एक ही पोर्टफोलियो होने के बाद भी अपने म्यूचुअल फंड से उच्च रिटर्न प्राप्त होगा डाइरेक्ट प्लान के अंतर्गत डिस्ट्रीब्यूशन एक्सपेंसिस या कमीशन का शुल्क नहीं लगता है, जिसके परिणामस्वरूप इन प्लान में रेगुलर प्लान की तुलना में कम' एनुअल चार्ज लगता है। इसलिए एक अलग NAV होता है। **2.रेगुलर प्लान म्यूचुअल फंड** रेगुलर प्लान म्यूचुअल फंड में मिडिल मैन या ब्रोकर्स को सेल्स कमीशन पैसों का भुगतान करते हैं, जो उन्हें बिज़नेस ला कर देते हैं।	**1.ओपन एंडेड म्यूचुअल फंड** एक ओपन एंड म्यूचुअल फंड वह फंड होता है जिस पर फंड द्वारा जारी किए जाने वाले शेयरों के अमाउंट पर कोई प्रतिबंध नहीं है। **2.क्लोज–एंडेड म्यूचुअल फंड** क्लोज–एंडेड फंड एक ऐसा फंड है जिसमें एक निश्चित मैच्युरिटी पीरियड होता है, उदाहरण के लिए 3 से 6 साल। ये फंड अपने लॉन्च के समय एक निश्चित अवधि के लिए सदस्यता लेने के लिए खुले होते है। ये फंड स्टॉक एक्सचेंज पर लिस्टेड होते हैं। **3.इंटरवल म्यूचुअल फंड** इंटरवल फंड ओपन एंडेड और क्लोज–एंड फंड दोनों को जोड़ते हैं। ये फंड स्टॉक एक्सचेंजों पर ट्रेड कर सकते हैं और मौजूदा NAV पर एक निश्चित अंतराल पर सेल या रिडेम्पशन के लिए ओपन होते हैं।

म्यूचुअल फंड में होल्डिंग पीरियड: म्यूचुअल फंड इन्वेस्टमेंट से कमाया गया पैसा भी एक इन्कम का रूप ही है **(कैपिटल गेन)** इसलिए इस पर भी टैक्स लगता है जिसे कैपिटल गेन टैक्स कहते है म्यूचुअल फंड में लाभ पर टैक्स उसकी होल्डिंग पीरियड के अनुसार और म्यूचुअल फंड के टाईप के आधार पर अलग–अलग होता है।

टाईप	शॉर्ट–टर्म होल्डिंग	लॉन्ग–टर्म होल्डिंग
इक्विटी फंड	12 महीने से कम	12 महीने या उससे अधिक
बलेंसेड फंड	12 महीने से कम	12 महीने या उससे अधिक
डेब्ट फंड	36 महीने से कम	36 महीने या उससे अधिक

टैक्स सेविंग म्यूचुअल फंड: इक्विटी–लिंक्ड सेविंग स्कीम **(ELSS)** म्यूचुअल फंड की एक श्रेणी है जिसे सरकार ने इक्विटी में लाँग टर्म इन्वेस्ट को और अधिक बढ़ावा देने के लिए बनाया है। **ELSS** म्यूचुअल फंड आयकर अधिनियम की धारा 80C के तहत टैक्स में लाभ प्रदान करते हैं। इस सेक्शन के अनुसार, कोई **ELSS** फंड में इन्वेस्ट करके 1,50,000 तक टैक्स में छूट का लाभ उठा सकता है।

म्यूचुअल फंड में इन्वेस्टमेंट के तरीके: म्यूचुअल फंड स्किम इन्वेस्टरों की विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बहुत से आसान, स्मार्ट और सुविधाजनक विकल्प या इन्वेस्टमेंट के तरीके बताता हैं। लम्प सम और सिस्टेमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान **systematic investment plan (SIP)** सबसे प्रसिद्ध है।

1. लम्प सम - Lump Sum: लम्प सम में किसी इन्वेस्टर द्वारा किसी भी म्यूचुअल फंड प्लान में एक ही बार मे बड़ा इन्वेस्टमेंट किया जाता है।

2. SIP : SIP म्यूचुअल फंड का एक प्लान है एक निश्चित अमाउंट का इन्वेस्टमेंट करने का विकल्प होता है मतलब की प्रेडेफिनेड रेगुलर इंटरवल पर इन्वेस्टमेंट होता है। यह रेगुलर सेविंग स्कीम्स रेकरिंग डिपाजिट **(Recurring Deposit)** के समान है। **SIP** या तो वीकली या मंथली या क्वार्टरली होता है।

अलग अलग प्रकार के म्यूचुअल फंड क्या हैं जिनमें इन्वेस्ट कर सकते हैं

रेटिंग	म्यूचुअल फंड प्लान चुनने में यह पहला कदम होता है। टॉप रेटिंग एजेंसी होती है जो कंपनियों द्वारा जारी म्यूचुअल फंड को रेट करती हैं।
NAV	NAV या नेट एसेट वैल्यू पोर्टफोलियो में शामिल सभी शेयरों के टोटल मार्किट वैल्यू (फंड से संबंधित सभी एक्सपेंस को लेने के बाद) जो उपलब्ध यूनिटों की संख्या से विभाजित होता है। म्यूचुअल फंड में छत लॉस और गेन का फंडामेंटल होता है। जब भी फंड के प्रॉफिट में वृद्धि होती है, नेट एसेट वैल्यू यूनिट्स में बिना किसी भी बदलाव के बढ़ता है, इस प्रकार यह निर्धारित करता है कि इन्वेस्टमेंट पर कोई लाभ मिल रहा है या नही।
एंट्री लोड	जब एक इन्वेस्टर म्यूचुअल फंड में इन्वेस्ट करता है तो एंट्री लोड चार्ज लिया जाता है। यह इन्वेस्ट के समय NAV में जोड़ा गया प्रतिशत होता है।
एग्जिट लोड	एग्जिट लोड को रिडेम्प्शन की तारीख पर चार्ज किया जाता है, और इसकी वैल्यू फंड टू फंड पर निर्भर रहती है। सेल्स चार्ज, एग्जिट और एंट्री लोड के रूप में कटौती किये गए पैसो को सीधे MC में जोड़ा जाता है,ना कि म्यूचुअल फंड में

AMC	यह एसेट्स मैनेजमेंट कंपनी का शार्ट फॉर्म होता है – वह कंपनी जो एक म्यूचुअल फंड चलाती है। उदाहरण के लिए HDFC म्यूचुअल फंड, ICICI प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड हैं। AMCs की सूची यहां होती है। टॉप AMCs के पास अच्छे और प्रोफेशनल फंड मैनेजर होते हैं।
AUM	इसका शार्ट फॉर्म होता एसेट्स अंडर मैनेजमेंट म्यूचुअल फंड प्लान का टोटल फंड इंवेसमेन्ट के लिए होता है।
बैंचमार्क	आप अपने रिटर्न की तुलना कर सकते हैं। विशेष बेंचमार्क सेंसेक्स और निफ्टी हैं। लेकिन फिर, आपके द्वारा चुने किए गए फंड के आधार पर बहुत सारे हैं।
फंड मैनेजर	फंड मैनेजर एक ऐसा व्यक्ति होता है जो यह तय करता है कि म्यूचुअल फंड में पैसा कहां इन्वेस्ट करना है। एक म्यूचुअल फंड का प्रदर्शन काफी हद तक अपने फंड मैनेजर पर ही निर्भर करता है।
होल्डिंग्स	होल्डिंग्स कंटेन्ट्स होते हैं जो इन्वेस्टमेंट पार्टफ़ोलियो पर म्यूचुअल फंड की मदद करते हैं । ये उन कंपनियों के नाम हैं जिनके शेयर या बॉन्ड खरीदे जाते हैं।
लॉक इन पीरियड	यह वह टाइम पीरियड होता है जिसमें इन्वेस्टमेंट को किसी टाइम पीरियड के लिए किया जाता है, जिससे पहले इन्वेस्ट किए पैसे को वापस नहीं लिया जा सकता है। टैक्स सेविंग म्यूचुअल फंड (ELSS) में 3 साल का लॉक–इन है।
रिटर्न	रिटर्न इन्वेस्टमेंट का लॉस या प्रॉफिट होता है। इसमें मूल रूप से वैल्यू / प्रिंसीपल अमाउंट से परिवर्तन होता है। म्यूचुअल फंड में, हम आम तौर पर 1 y, 3 y और 5 y रिटर्न की जांच करते हैं।
रिस्क	रिस्क का मतलब इन्वेस्टमेंट में आमतौर पर अनिश्चितता से होता है। यह स्टैण्डर्ड या एक्सपेक्टेड वैल्यू से डेविएशन (विचलन) होता है। प्रत्येक म्यूचुअल फंड इसके एसेट एलोकेशन के आधार पर जुड़े रिस्क के अगेंस्ट रेट करते हैं।
SIP	यह म्यूचुअल फंड में हर महीने इन्वेस्ट (SIP) करने की मिनिमम अमाउंट है। यह अमाउंट AMC द्वारा तय किया जाता है

म्यूचुअल फंड के चार्ज

म्यूचुअल फंड **(Mutual Fund)** स्कीम में होने वाले सभी खर्च को एक्सपेंस रेश्यो कहते हैं। एक्सपेंस रेश्यो से यह पता लगता है कि किसी **Mutual Fund** के प्रबंधन में प्रति यूनिट क्या खर्च आता है। आम तौर पर एक्सपेंस रेश्यो किसी साप्ताहिक नेट एसेट के औसत का 1.5–2.5 फीसदी होता है।

म्यूचुअल फंड के फायदे–

* हर म्यूचुअल फंड हाउस को एक फंड मैनेजर संभालता है । वे निवेश की हुई राशि से पोर्टफोलियो बनाते है। इस पोर्टफोलियो में शेयर, बॉन्ड, मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट या उनका संयोजन होता है। प्रोफेशनल्स बारीकी एवं निगरानी से निवेश करते हैं ताकि जोखिम की सम्भावना कम रहे और बेहतर रिटर्न्स मिले।

* म्यूचुअल फ़ंड के जरिए आप बहुत सारे अलग–अलग शेयर खरीदते हैं । इसका फ़ायदा यह है कि एक बहुत बड़े पूल ऑफ मनी के हिस्सेदार बन जाते हैं । कोई भी फ़ायदा या नुकसान सभी हिस्सेदारों में समान अनुपात में बाँटा जाता है।

* पैसो को विभिन्न शेयर और बॉन्ड में निवेश किया जाता है इसी वजह से आपकी जोखिम भी कम हो जाती है।

संदर्भ :

https://hi.wikipedia.org | https://groww.in

शिल्पा कुकरेती
वरिष्ठ प्रबन्धक
बड़ौदा अकादमी, जयपुर

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

जीवन को नहीं, ज़िन्दगी को जिएं...!!!

मानव जीवन, ईश्वर द्वारा की गई सबसे अनमोल रचना है, जिसे ईश्वर ने बड़े ही भाव से रचा है। वास्तव में, मानव जीवन समस्त जीवों में सर्वोत्कृष्ट है। इस धरा पर ऐसा कोई कार्य नहीं, जो मानव द्वारा असाध्य हो। हम सब बोल सकते हैं, अपनी भावना व्यक्त कर सकते हैं । मानव ही एकमात्र सामाजिक प्राणी है।

परंतु यही जीवन जो ईश्वर की सबसे प्यारी देन है, आज हमारे ही अवगुणों के कारण सबसे बड़ा अभिशाप बनता जा रहा है। आज हम जीवन जी तो रहे हैं, पर इसमें ज़िन्दगी नहीं है..!! यही सबसे बड़ी विडंबना है। अधिकांश व्यक्तियों का जीवन नीरस हो चुका है। हर कोई अपनी ही उधेड़बुन में लगा है। इसी आपाधापी में वह एक चीज़ भूल रहा है, और वह है **'स्वयं'**। हमारे पास सबके लिए समय है, पर स्वयं के लिए एक क्षण भी नहीं।

हर कोई एक अजीब सी बेचैनी का शिकार है, सभी को अनायास ही एक मृगतृष्णा सी है। इंसान ने इस दुनिया को बेहतर बनाने के लिए बहुत से प्रयास किये हैं, रोज़ नए नए आविष्कार हो रहे हैं, जिनसे मानव जीवन और सरल होता जा रहा है। हां, जीवन तो सरल हो रहा है, परंतु जीवन जितना सरल हो रहा है, उसे जीना उतना ही मुश्किल।

सब लोग अवसाद से ग्रस्त हो रहे हैं। ऐसा प्रतीत होने लगा है कि जैसे इस दुनिया में कोई भी खुश नहीं है, चारों ओर अशांति है, द्वेष है, घृणा है, रोग हैं। चाहे घर हो, कार्यस्थल हो या कोई भी अन्य सार्वजनिक स्थल, इंसान सिर्फ अपना ही वर्चस्व खोजता है और यही उसकी सबसे बड़ी भूल है।

घर में हो तो पति पत्नी अपने अपने वर्चस्व की लड़ाई लडते रहते हैं। एक ओर पति को लगता है कि वह घर में सभी का जीवन-यापन करता है, कमा कर लाता है, यदि वह न हो तो घर में सबका जीना असंभव है, परंतु वह यह भूल जाता है कि धन के अभाव में कोई नहीं मरता। पेड़ पौधे, पक्षी, जानवर ये सब भी बिना धन के उतना ही जीवन जीते हैं, जितना उन्हें ईश्वर ने दिया है। पत्नी को यह लगता है कि उसी के कारण घर को घर कहा जाता है, वही है जो सबका ध्यान रखती है, वही सबको भोजन देती है, रोज़मर्रा के सभी काम करती है। इसलिए घर में उसका वर्चस्व अधिक है। यह कोई नहीं समझता कि दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे है एवं जीवन की गाड़ी दोनों पहियों पर समान रूप से निर्भर है। वर्चस्व की इसी लड़ाई में, ज़िन्दगी कही पीछे छूट जाती है, शेष रह जाता है तो बस अवसाद, चिंता और द्वेष।

कार्यालय में भी कमोबेश यही हाल है। ऐसा लगता है जैसे कि कार्यालय न हो, एक युद्ध स्थल हो, जिसमें सभी प्यादे हैं, जो अपनी ही सेना में एक दूसरे के विपक्ष ही युद्ध कर रहे हों। सबका एक ही मकसद है, सिहांसन (उच्चतम पद) तक पहुंचना। इसे पाने के लिये सब एक दूसरे को काटते चले जाते हैं, आपसी प्रेम एवं विश्वास का स्थान ईर्ष्या एवं द्वेष ले लेते हैं। सबको लगता है कि उसी के पास सबसे अधिक कार्य है, दूसरा व्यक्ति सबसे निकृष्ट है। व्यवसाय के लिए नौकर भी उतना ही आवश्यक है, जितना कि मालिक। लोग यह भूल जाते हैं कि उगते सूरज को ही सलाम होता है एवं डूबते सूरज से सब दूर भागते हैं। एक दिन सभी को सेवानिवृत्त होना है और उसके बाद चाहे सर्वोच्च अधिकारी हो, चाहे चपरासी, किसी को कोई नहीं पूछता। सब की एक ही जैसी दशा होती है। तब हर आदमी को वही साथी याद आते हैं, जिन्हें काटकर वह आगे बढ़ा था। यही जीवन का कटु सत्य है।

सामाजिक जीवन में भी इंसान स्वयं को सर्वोच्च प्रमाणित करने में लगा रहता है। सबको यही होड़ रहती है कि वही अपने आस पास के समाज का सर्वोच्च व्यक्ति हो। हम चाहते हैं कि जैसा हम सोचते है, सभी वैसा ही सोचें। हमारी नीतियां ही सर्वोपरि हों। हमे ऐसा लगता है कि समाज के लिए हमसे अधिक किसी ने नहीं किया। और यहीं हम मात खा जाते हैं।

किसी शायर ने सच ही कहा है –

''उम्र ज़ाया कर दी लोगों ने औरों के वज़ूद में नुख्स निकालते निकालते, इतना ही खुद को तराशा होता, तो फरिश्ते बन जाते''

ज़िन्दगी क्या है? ये एक ऐसा सवाल है जिसका आज तक कोई सटीक उत्तर नहीं दे पाया है कोई इसे गम का सागर कहता है तो कोई

इसे खुशियों की सौगात मानता है। परन्तु ज़िन्दगी की अन्तिम सच्चाई एवं सार ये है कि ये चलती जाएगी। जीवन की लंबाई नहीं, गहराई मायने रखती है। यह ज़रूरी नहीं कि हम ज़्यादा जिएं, पर जितना जिएं, उसमें ज़िन्दगी हो। स्वयं को समय दीजिये, पहचानिए, छोटी छोटी बातों में वर्चस्व की लड़ाई न लड़े, अपितु खुद की मैं को मारकर सबको सच्चाई की नज़र से देखें। ऐसे देखें, कि सब अच्छे हैं। फिर देखिए, कैसे आपका जीवन तनावमुक्त और ज़िन्दगी से परिपूर्ण बन जाएगा, आपको भी पता नहीं चलेगा।

मानव जीवन वह कस्तूरी मृग है, जो कस्तूरी की खोज में सम्पूर्ण जीवन इधर उधर भटकता है एवं कस्तूरी को बिना खोजे ही मर जाता है। उसे यह नहीं पता कि वह कस्तूरी जिसे ढूंढने में उसने पूरा जीवन लगा दिया, वह उसके स्वयं के अंदर ही व्याप्त है।

जितना हम सोचते हैं, जीवन उस से कहीं अधिक छोटा है, यह एक बार मिलता है। इसलिए इसे छोटी–छोटी बातों पर व्यर्थ न कर अपने हर सपने को पूरा करने में लगाएं। जीवन से बचकर आप शांति नहीं पा सकते। जीना दुनिया की सबसे नायाब चीज़ है, पर अफसोस कि ज़्यादातर लोग बस इसमें मौजूद रहते हैं, जीते नहीं।

ज़िन्दगी एक पल है, जिसमें न आज है ना कल है....
जी लो इसको इस तरह कि जो भी आपसे मिले बस यही कहे...
कि यही मेरी ज़िंदगी का सबसे हसीन पल है....!!!

मरने का डर जीने के डर से पैदा होता है। जो इंसान पूरी तरह जीता है वो किसी भी वक़्त मरने के लिए तैयार रहता है। जितना सत्य यह है कि सब मरते हैं, उतना ही सत्य यह भी है कि सभी लोग जीते नहीं हैं। जब तक हम यह जान पाते हैं कि ज़िन्दगी क्या है, यह आधी बीत चुकी होती है। इसलिए खुश रहिये, और हर पल हर दिन को जी भर के जियो।

किसी शायर ने सच ही कहा है –
''किस हद तक जाना है, ये कौन जानता है..!!!
किस मंज़िल को पाना है, ये कौन जानता है...!!
ज़िन्दगी दो पल की, जी भर के जी लो,
किस रोज़ बिछड़ जाना है, ये कौन जानता है...!!!

ईशु चावला
प्रबंधक (अग्रिम विभाग)
क्षेत्रीय कार्यालय, बीकानेर

हाँ हाँ कौन्तेय वार कर ।

सारे वियोग को त्याग कर,
हाँ हाँ कौन्तेय वार कर ।
माना कि यह विपदा की घडी है,
सबको सिर्फ स्वार्थ की अडी है,
तो सिर्फ तुझे ही क्यूँ औरों की पडी है?

तू याद कर कुन्ती के अपमानों को,
तू याद कर तेरी पत्नी को मिले तानो को,
तू याद कर अभिमन्यु के करूण रुदानो को,
तू याद कर तेरे पौत्रो की शवशय्या के निशानो को ।

अपनी शन्काओ को त्याग कर,
हाँ हाँ कौन्तेय वार कर ।

पर पार्थ, ये सब भी तो अपने है,
इनके भी परिवार है, सपने है ।
सब भूल कर मैं आगे चला जाऊँगा,
चाहे जीतू या हारू मै ही छला जाऊँगा ।

हे गान्डीव धारी, मत रोक तेरी फड़कती भुजाओं को,
आगे बढ़ बाण दे कमानो को,
ताक पर रख तेरी हर चिन्ता को,
मैं हर लूँगा तेरी हर विघ्नता को ।

मैं ही आदि मैं ही अन्त हूँ, विश्वास रख
जो है सामने उनकी मुक्ति की आस रख,
इनको मार कर पापों से मुक्त हार कर,
हाँ हाँ कौन्तेय वार कर ।
हाँ हाँ कौन्तेय वार कर ।

गौरव शर्मा
अधिकारी
वैशाली नगर शाखा
जयपुर क्षेत्र

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

सोशल मीडिया की महत्ता

चूँकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अतः उसे अन्य समान एवं असमान प्राणियों के साथ संवाद या संचार की आवश्यकता होती है, संचार की परिभाषा इस प्रकार है: संचार लोगों को अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने में मदद करता है, और साथ ही, यह हमें दूसरों की भावनाओं और विचारों को समझने में मदद करता है। दूसरे शब्दों में कहे तो संचार जानकारी देने, प्राप्त करने और साझा करने का कार्य है यथा बात करना या लिखना, और सुनना या पढ़ना।

बदलते समय एवं तकनीकी विकास के फलस्वरूप संचार के माध्यम भी निरंतर विकसित एवं बदलते रहे हैं। मनुष्य ने भित्ति चित्रों से शुरुआत कर इशारों से संवाद किया, तदुपरांत अपनी विशिष्ट भाषा विकसित की, उसके उपरान्त पत्र लेखन, टेलीग्राम, फिर टेलीफोन के युग में कदम रखा। समय एवं तकनीकी का पहिया निरंतर चलता गया एवं कंप्यूटर युग में आकर पत्र का स्थान ई–मेल ने ले लिया। फिर मोबाइल जीवन में एक नई क्रांति लेकर आया, जिसने लोगों की आपस की दूरियों को पाटने का कार्य किया।

मोबाइल के प्रयोग एवं इसकी तकनीकी के विकास के साथ साथ मनुष्य जीवन में अत्यधिक तीव्र गति से बदलाव आए है जो प्रतिदिन ही हमें दिखाई देते है एवं साधारण मानव चाहते हुए भी इसके प्रयोग एवं प्रभाव से वंचित नहीं रह सकता है । इसी के साथ साथ एक नया संचार माध्यम विकसित हुआ जिसे हम सोशल मीडिया के नाम से जानते है।

अब बात आती है कि सोशल मीडिया क्या है? सोशल मीडिया एक कंप्यूटर पर आधारित ऐसी तकनीक है जो आभासी अर्थात वर्चुअल नेटवर्क के माध्यम से विचारों और सूचनाओं को साझा करने की सुविधा प्रदान करती है।

शुरुआत में केवल युवाओं एवं विद्यार्थियों के प्रयोग हेतु देखे जाने वाले सोशल मीडिया के प्रयोग से आज कदाचित ही कोई वर्ग अछूता रहा है। इसकी महत्ता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि आज चाहे वह डॉक्टर हो या इंजीनियर, सरकारी कर्मचारी हो या कोई प्राइवेट कंपनी का कर्मचारी, यहां तक की राज्यों के मुखिया, राष्ट्रों के प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति, राज्य सरकारें तक सोशल मीडिया पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुकी है।

यहां तक कि धर्मगुरु एवं धार्मिक संस्थाएं तक भी इससे वंचित नहीं रह पाई है। बच्चे हो या बूढ़े, विद्यार्थी हो या शिक्षक, कर्मचारी हो या कंपनी, ग्राहक हो या दुकानदार, सोशल मीडिया पर आने के सभी के अपने अपने कारण उपलब्ध है। इन सभी ने सोशल मीडिया पर ना केवल उपस्थिति मात्र दर्ज की है अपितु सोशल मीडिया को संचार का एक महत्वपूर्ण साधन एवं प्लेटफार्म मानते हुए इसके माध्यम से संचार, आदेश, सूचना एवं अन्य कार्य भी करने लगी है। यह सोशल मीडिया की ताकत ही है जिसने पत्राचार, कागज एवं लाल फीताशाही के आदि लोगों में इस नवीन संचार माध्यम के उपयोग हेतु स्थान प्रदान किया।

हम देखते हैं कि हमारे देश के प्रधानमंत्री एवं राज्य के मुख्यमंत्री भी सोशल मीडिया पर कितने सक्रिय हैं, पल–पल की खबर वे सोशल मीडिया यथा फेसबुक एवं ट्विटर के माध्यम से देते रहते हैं। यही नहीं, कितनी बार तो सरकारी आदेश तक हमें इन प्लेटफॉर्म के माध्यम से मिलते हैं।

आज के युग में लगभग सभी प्रकार के व्यवसायों के पास एक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है। इसका सबसे बड़ा कारण है कि आज सोशल मीडिया साइटों पर लाखों यूजर्स या यूँ कहे कि बाजार हेतु ग्राहक मिल जाएंगे। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, फेसबुक मैसेंजर, वीचैट और व्हाट्सएप जैसी साइटों ने लोगों के जीवन पर एक बड़ा

प्रभाव डाला है। न केवल फोटो और जानकारी साझा करना बल्कि व्यापार और व्यवसाय भी फले-फूले हैं। सोशल मीडिया साइटों पर संख्या लगातार बढ़ रही उपयोगकर्ताओं की बड़ी संख्या स्पष्ट रूप से इंगित करती है कि आज की दुनिया में सोशल मीडिया कितना महत्वपूर्ण है, इसने सूचना और संचार के क्षेत्र में पूरी अवधारणा को बदल दिया है।

यदि किसी कंपनी, संस्थान, बैंक अथवा कोई वित्तीय संस्था को अपने व्यवसाय को बढ़ाना है या बचाए भी रखना है तो उसे सोशल मीडिया पर उतरना ही होगा अन्यथा वह इस प्रतिस्पर्धा के युग में पिछड़ जाएगी। इसी के परिणामस्वरूप हम देखते हैं कि आज हर बैंक, वित्तीय संस्था, कंपनी यहाँ तक की सरकारी विभाग तक ने सोशल मीडिया पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी है।

आज सोशल मीडिया केवल मात्र एक संचार का माध्यम न रहकर एक बाजार बन चुका है जहां आपको असीमित ग्राहक चौबीस घंटे वह भी असीमित क्षेत्र से मिल जायेंगे जो शायद भौतिक बाजार में किसी भी कीमत पर ना मिलते। इस बाजार को भुनाने एवं अपने उत्पादों को बेचने का मौका कौन गंवाना चाहेगा।

कोरोना काल ने तो इस प्लेटफार्म की कीमत को और भी ज्यादा बढ़ा दिया है। गत एक वर्ष से अधिक के समय से विद्यार्थियों ने कक्षाएं वर्चुअल माध्यम से ली है, स्कूल, कॉलेज एवं अन्य शिक्षण संस्थानों ने भी खुद को इस तकनीक में ढ़ाला है, कॉर्पोरेट एवं अन्य विभागों की बैठकें इसी माध्यम से हुई हैं, लोगों ने बैंक, अन्य विभागों के कार्य हेतु भी इसी माध्यम की ओर प्रस्थान किया है। यह सब इसकी सुगमता एवं व्यापक उपयोग की ओर इंगित करता है।

अब यदि हम बैंक एवं सोशल मीडिया के सम्बन्ध की बात करें तो मुख्य कारण इस प्रकार से है जिसने बैंकों को सोशल मीडिया के प्रयोग हेतु बाध्य कर दिया: बैंकों को सोशल मीडिया के माध्यम से बैठे बिठाये ग्राहक मिल गए जो कि भौतिक शाखा प्रणाली की तुलना में कहीं ज्यादा है, लोग अपनी वित्तीय आवश्यकता हेतु सोशल मीडिया के कई प्लेटफार्म जैसे पैसा बाजार, बैंकों की वेब साइट इत्यादि इस्तेमाल करने लगे हैं जिससे उन्हें तुरंत वित्तीय सुविधा उपलब्ध हो जाती है, अब यदि कोई संस्था या बैंक इस अवसर को नहीं भुना पाता है तो निश्चित ही वह अपने ग्राहक एवं बाजार खो देगा। सोशल मीडिया नित नए कितने ही ग्राहक स्वत: उपलब्ध करा देता है, आवश्यकता है तो उनसे संपर्क करने एवं उनकी आवश्यकताओं को समझने और पूर्ण करने की।

बैंक या वित्तीय संस्था इस बदलते युग में अपने उत्पादों का प्रचार प्रसार सोशल मीडिया के माध्यम से कर सकते हैं, जैसे किसी त्योहार विशेष पर कोई विशिष्ट उत्पाद को लाना हो तो कम समय में एवं अधिकाधिक लोगों के मध्य पहुँचाना इस प्लेटफार्म के अतिरिक्त शायद ही अन्य किसी प्रकार से संभव हो।

इन सब के साथ ही बदलते युग में ट्रेंड भी बदल रहे हैं, प्रतिदिन ही कोई नया ट्रेंड आ जाता है, जिससे लोगों की आवश्यकताएं एवं आकांक्षाएं भी बदलती रहती है, बैंकिंग के क्षेत्र में हमें लोगों की आवश्यकताओं को ही पहचानना होता है, इस प्रकार नए ट्रेंड से सोशल मीडिया अवगत करवाता है जिससे कि हम लोगों की आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप अपने उत्पादों में बदलाव कर सके या नव उत्पाद बाजार में उतार सकें।

क्रेडिट कार्ड, कार लोन, पर्सनल लोन, गोल्ड लोन, एजुकेशन लोन एवं होम लोन के क्षेत्र में तो यदि कहे कि सोशल मीडिया का योगदान अन्य सभी माध्यमों से कहीं ज्यादा आगे है तो अतिश्योक्ति ना होगी। हमारे उत्पादों एवं सेवाओं के प्रति लोगों की प्रतिक्रियाएं भी हमें सोशल मीडिया से मिलाती है जो हमें खुद के उत्पादों एवं सेवाओं में सुधार करने हेतु प्रेरित करती हैं।

अन्तत: निष्कर्ष यही निकलता है चाहे कोई भी क्षेत्र हो, कंपनी हो, सेलेब्रिटी हो, या अन्य कोई भी व्यक्ति यदि उसे बदलते युग के साथ खुद के कदम मिलाने हैं तो सोशल मीडिया पर आना एवं सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करनी ही होगी।

धीरज के. सुथार
प्रबंधक
(कृषि एवं वित्तीय समावेशन विभाग)
क्षेत्रीय कार्यालय, झुंझुनूं

मानव जीवन

अस्त व्यस्त, तितर बितर, घने कोहरे जैसे
वातावरण में ये जीवन सुंदर,
मन रे, मत बुन वो सपने जो ना इधर और ना उधर,
मस्तिष्क का ले सहारा सोचने में जो दे सके
एक चिंतन को आधार निरंतर,
मनन के बिना सोचने में न लगा समय, पहले देख ले कितने
भयानक चेहरेदर बदर,
रे मानव, समझ को बना ढाल अपनी, तू क्यूं न उतारे
विवेकानंद के विचार अपने अंदर,
क्यूं न बने वल्लभ जैसा लौह तू, तू चल कर तो देख
गांधी के पथ पर।
सच्चाई को छोड कर मत आना ऐसे दलदल में, जहां झूठ की
कीचड से हर पांव सना है घुटनों तक,
युवा है तू पगले, ऐसे गंदगी के कैंसर से तो मत मर।
कृष्णे की जन्म भूमि में पनप रहे कंस हर जगह,
न अपना सके कृष्ण की वाणी कम से कम
गीता को यूं गंदा मत कर।
अपना लाभ देख दूसरे का हरण करने में उतारू क्यू,
क्या रह गया सिर्फ स्वार्थ का समंदर।
राम के पुरुषार्थ को अग्नि में जला, अरे मानव नहीं तो जानवर
से अपना अंतर तो कर।
''मैं'' के फेर में जीवन मत गवा रे इंसान, ब्रह्मा की उपज को
ऐसे निराधार मत कर।
अब बचा ही क्या है जो जीवन की सुंदरता को
बिगाडने में लगा है तू,
क्या मानेगा तब ही जब रह जायेगा हर जगह सिर्फ डर।
उन महान विभूतियों को भूल चुका है तू, जिन्होनें लगाया
सर्वस्व अपना तुझे कुछ अच्छा देने के लिए,
श्रद्धांजलि न दे सके उन सबको तो यूं रावण
बन उन सबका अनादर मत कर।
महान कार्य न कर पाये इस जीवन में तो सबसे
पहले दिखा एक इंसान बन कर।

मनीष डीगवाल
अधिकारी,
क्षेत्रीय कार्यालय, भीलवाडा

हिंदी

हर क्षण हिंदी, हर मन हिंदी,

हर सर हिंदी, घर घर हिंदी,

बचपन हिंदी, यौवन हिंदी,

प्रगति हिंदी, जीवन हिंदी,

हर आज हिंदी, हर कल हिंदी,

हर पल हिंदी, पल पल हिंदी,

संगति हिंदी, हर सांस हिंदी,

हर आस हिंदी, विश्वास हिंदी,

हर पत्र हिंदी, सर्वत्र हिंदी,

भाषा हिन्दी, अभिलाषा हिंदी,

सदृढ़ हिंदी, संस्कार हिंदी,

समाज हिंदी,व्यवहार हिंदी

बस सुन हिंदी, और बोल हिंदी,

है भाषा यह अनमोल हिंदी।

नरेंद्र प्रकाश जौहर
व्यवसाय सहायक
क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

व्हाट्सएप बैंकिंग

बैंक ऑफ़ बड़ौदा सदैव ग्राहक केंद्रित पहलों की शुरुआत करने में अग्रणी रहा है जिसका प्रयोजन सुरक्षा एवं संरक्षा के साथ बैंकिंग सेवाओं की सहज उपलब्धता प्रदान करना है। बैंक ने नए डिजिटल डिलीवरी चैनल – व्हाट्सएप बैंकिंग के शुभारंभ किया है, नई विशेषताओं और पूरे नए प्रयोक्ता इंटरफेस के साथ बैंक ऑफ़ बड़ौदा का नया व्हाट्सएप बैंकिंग सभी ग्राहकों के लिये नि:शुल्क उपलब्ध है।

''व्हाट्सएप बैंकिंग'' 24x7 आधार पर प्रभावी ग्राहक सेवा प्रदान करने हेतु वैकल्पिक वितरण चैनल के रूप में आरंभ की गई सुविधा है, जो कि घर बैठे बैंकिंग की सुविधा ग्राहकों को प्रदान करने में सक्षम है। यह रिटेल ग्राहकों को अनूठी अनुकूलित सेवाएं प्रदान करता है।

कोविड – 19 महामारी की स्थिति में, बैंक ऑफ बड़ौदा ग्राहकों और अपने कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए व्यवसाय की निरंतरता एवं आम जन को अत्यावश्यक बैंकिंग सेवाओं की निर्बाध उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए हरसंभव प्रयास किया है। इसी श्रृंखला में ग्राहकों की सुविधा के लिये व्हाट्सएप बैंकिंग का आगाज़ किया गया है ताकि घर बैठे ग्राहकगण बैंकिंग सुविधा प्राप्त कर सकें। ग्राहकों को लाभप्रद प्रौद्योगिकी द्वारा बाधारहित और सुविधाजनक बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध करवाने हेतु बैंक ने व्हाट्सएप बैंकिंग की सुविधा शुरू की है। सभी ग्राहक जिन्होंने अपना मोबाइल नंबर पंजीकृत किया है वे अपने पंजीकृत मोबाइल नंबर से 8433888777 पर "Hi" भेजकर, सेवाओं का आनन्द ले सकते हैं।

आइये जानते हैं कि व्हाट्सएप बैंकिंग में रजिस्टर कैसे करें? (2 चरणों मे व्हाट्सएप बैंकिंग)

चरण 1: स्वयं को रजिस्टर करें

अपने मोबाइल संपर्क सूची में बैंक के व्हाट्सएप कारोबार खाता संख्या 8433888777 को सेव करें

चरण 2: चैटिंग आरंभ कीजिए

व्हाट्सएप प्लेटफार्म का उपयोग करते हुए इस नंबर पर "Hi" भेजें और अपनी बातचीत शुरू करें। बातचीत के आरंभ का तात्पर्य यह होगा कि आप व्हाट्सएप बैंकिंग के नियम व शर्तों से सहमत हैं।

व्हाट्सएप बैंकिंग की प्रमुख विशेषताएं

हमारे रिटेल ग्राहकों के ग्राहकों के लिए उपलब्ध सुविधाएं

- खाते में शेष राशि की जांच
- संक्षिप्त विवरण प्राप्त करना (विगत पांच लेनदेनों का)
- चेक बुक अनुरोध
- चेक स्थिति संबंधी पूछताछ
- डेबिट कार्ड ब्लॉक करना
- शिकायत करना
- ग्राहक आईडी जांच
- पंजीकृत मेल आईडी जांच
- ब्याज दर व प्रभार जांच
- नजदीकी शाखा / एटीएम का पता लगाएं
- संपर्क केंद्रों के विवरण
- बैंक के विभिन्न उत्पाद / सेवाओं / ऑफर के लिए आवेदन करना/ जानकारी लेना

इस सुविधा की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं

यह सुविधा नि:शुल्क है। यह सुविधा 24x7 उपलब्ध हैं तथा बैंक ऑफ़ बड़ौदा की स्मार्ट बैंकिंग सेवाओं मे सबसे लोकप्रिय सेवा बनने मे सक्षम हैं ।

अभ्रज्योति बनर्जी
अधिकारी
खैराबाद शाखा
भीलवाड़ा क्षेत्र

करें योग रहें निरोग

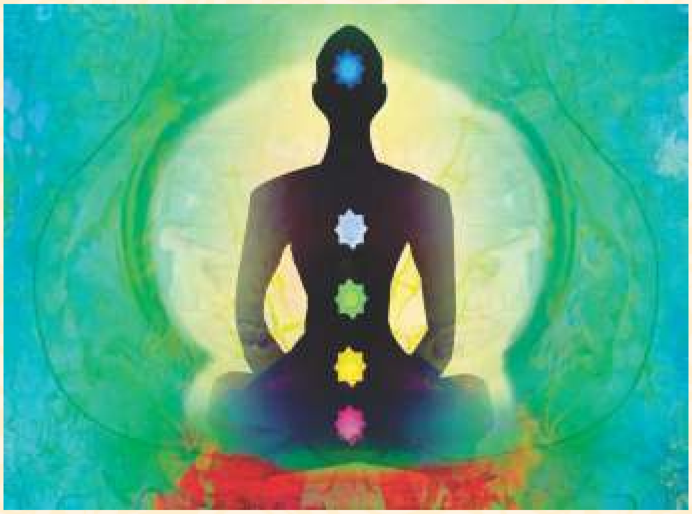

हम सभी के जीवन में योग काफी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शरीर तथा मस्तिष्क के संबंधों में सन्तुलन बनाने में हमारी काफी सहायता करता है। योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के शब्द से हुई है, जिसके दो अर्थ हैं। एक अर्थ है जोड़ना और दूसरा अर्थ है अनुशासन। यह शरीर के तीन मुख्य तत्वों; शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के बीच संपर्क को नियमित करता है। यह एक आध्यात्मिक अभ्यास है, जो शरीर और मस्तिष्क के संतुलन के साथ ही प्रकृति के करीब आने के लिए ध्यान के माध्यम से किया जाता है। यह एक प्रकार का व्यायाम है, इसके नियमित अभ्यास के द्वारा हम शारीरिक और मानसिक रुप से स्वस्थ रह सकते हैं। इसके लिए केवल शरीर के क्रियाकलापों और श्वास लेने के सही तरीकों का नियमित अभ्यास करने की आवश्यकता है। यह शरीर के सभी अंगों के कार्यकलाप को नियमित करता है और कुछ बुरी परिस्थितियों और अस्वास्थ्यकर जीवन–शैली के कारण शरीर और मस्तिष्क को परेशानियों से बचाव करता है। यह स्वास्थ्य, ज्ञान और आन्तरिक शान्ति को बनाए रखने में मदद करता है। अच्छे स्वास्थ्य प्रदान करने के द्वारा यह हमारी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करता है, ज्ञान के माध्यम से यह मानसिक आवश्यकताओं को पूरा करता है और आन्तरिक शान्ति के माध्यम से यह आत्मिक आवश्यकता को पूरा करता है, इस प्रकार यह हम सभी के बीच सामंजस्य बनाए रखने में भी मदद करता है।

हर सुबह नियमित योग का अभ्यास हमें अनगिनत शारीरिक और मानसिक बीमारियों से बचाने का कार्य करता है। योग के विभिन्न आसन मानसिक और शारीरिक मजबूती के साथ ही अच्छाई की भावना का निर्माण करते हैं। यह मानव मस्तिष्क को तेज करता है, बौद्धिक स्तर को सुधारता है और भावनाओं को स्थिर रखकर उच्च स्तर की एकाग्रता में मदद करता है। अच्छाई की भावना मनुष्य में सहायता की प्रकृति के निर्माण करती है और इस प्रकार, सामाजिक भलाई को बढ़ावा देती है। एकाग्रता के स्तर में सुधार ध्यान में मदद करता है और मस्तिष्क को आन्तरिक शान्ति प्रदान करता है। योग प्रयोग किया गया दर्शन है, जो नियमित अभ्यास के माध्यम से स्व–अनुशासन और आत्म जागरूकता को विकसित करता है।

योग का अभ्यास किसी के भी द्वारा किया जा सकता है, क्योंकि आयु, धर्म या स्वस्थ परिस्थितियों से परे है। यह अनुशासन और शक्ति की भावना में सुधार के साथ ही जीवन को बिना किसी शारीरिक और मानसिक समस्याओं के स्वस्थ जीवन का अवसर प्रदान करता है। यह व्यायाम का ही एक अद्भुत प्रकार है, जो शरीर और मन को नियंत्रित करके जीवन को बेहतर बनाता है। योग हमेशा स्वस्थ जीवन जीने का एक विज्ञान है। यह एक दवा की तरह है, जो हमारे शरीर के अंगों के कार्यों करने के ढंग को नियमित करके हमें विभिन्न बीमारियों से बचाने का कार्य करता है। योग वो इलाज है, यदि इसका प्रतिदिन नियमित रुप से अभ्यास किया जाए, तो यह बीमारियों से धीरे–धीरे छुटकारा पाने में काफी सहायता करता है। यह हमारे शरीर में कई सारे सकारात्मक बदलाव लाता है और शरीर के अंगों की प्रक्रियाओं को भी नियमित करता है। विशेष प्रकार के योग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किए जाते हैं, इसलिए केवल आवश्यक और बताये गए योगों का ही अभ्यास करना चाहिए।

योग कला की उत्पत्ति प्राचीन भारत में हुई थी। पहले के समय में बौद्ध तथा हिन्दू धर्म से जुड़े लोग योग और ध्यान का प्रयोग करते थे। योग कई तरह के होते हैं जैसे राजयोग, कर्म योग, ज्ञान योग, भक्ति योग और हठ योग। लेकिन जब ज्यादातर लोग भारत या विदेशों में योग के बारे में बात करते हैं, तो उनका आमतौर पर हठ योग होता है, जिसमें ताड़ासन, धनुषासन, भुजंगासन, कपालभांति और अनुलोम–विलोम जैसे कुछ व्यायाम शामिल होते हैं। योग पूरक या वैकल्पिक चिकित्सा की एक महत्वपूर्ण प्रणाली है। आमतौर पर हस्त योग के अन्तर्गत बहुत से आसनों का भारत में अभ्यास किया जाता है। योग हमारे शरीर में

शांति बढ़ाने और हमारे सभी तनाव तथा समस्याओं मुक्ति दिलाने का कार्य करता है। इसका अभ्यास लोगों के द्वारा किसी भी आयु में किया जा सकता है जैसे बचपन, किशोरावस्था, वयस्क या वृद्धावस्था। इसके लिए नियंत्रित तरीके से सांस लेने के साथ सुरक्षित, धीमे और नियंत्रित शारीरिक गतिविधियों की भी आवश्यकता होती है। वयस्कों और बच्चों की तुलना में वयस्कों की आयु में सबसे ज्यादा समस्याएं हैं। योग करने से शरीर में शांति का स्तर बढ़ जाता है जिसके कारण हमारे अंदर आत्मविश्वास भी जागृत होता है। यह शरीर और मस्तिष्क के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए, इन दोनों को संयुक्त करने का सबसे अच्छा अभ्यास है। यह एक व्यक्ति को सभी आयामों पर, जैसे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक स्तर पर नियंत्रण के द्वारा उच्च स्तर की संवेदनशीलता प्रदान करता है। स्कूल और कालेज में विद्यार्थियों की बेहतरी के साथ ही पढ़ाई पर उनकी एकाग्रता को बढ़ाने के लिए भी योग के दैनिक अभ्यास को बढ़ावा दिया जाता है। यह लोगों द्वारा किया जाने वाला व्यवस्थित प्रयास है, जो पूरे शरीर में उपस्थित सभी अलग–अलग प्राकृतिक तत्वों के अस्तित्व पर नियंत्रण करके व्यक्तित्व में सुधार लाने के लिए किया जाता है। योग के दौरान श्वसन क्रिया में ऑक्सीजन लेना और छोड़ना सबसे मुख्य वस्तु है। दैनिक जीवन में योग का अभ्यास करना हमें बहुत सी बीमारियों से बचाने के साथ ही कई सारी भयानक बीमारियों जैसे– कैंसर, मधुमेह (डायबिटीज़), उच्च व निम्न रक्त दाब, हृदय रोग, किडनी का खराब होना, लीवर का खराब होना, गले की समस्याओं तथा अन्य बहुत सी मानसिक बीमारियों से भी हमारी रक्षा करता है। एक बार जब कोई व्यक्ति नियमित आधार पर योग करना शुरू करता है, तो वे जल्द ही इसका प्रभाव महसूस करना शुरू कर देता है। यह जोड़ों में दर्द को हटाने में भी मदद करता है, जो कि ज्यादातर बड़े लोगों में एक आम बात है। ये लोगों को प्राकृतिक तरीकों से भी रोगों से मुक्ति दिलाता है जिससे मनुष्य अपने शरीर में काफी लचीलापन तथा फुर्ती महसूस करता है। पूरे संसार में इसके बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए, भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने, संयुक्त संघ की सामान्य बैठक में 21 जून को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के रुप में मनाने की घोषणा करने का सुझाव दिया था, ताकि सभी योग के बारे में जाने और इसके प्रयोग से लाभ लें। योग भारत की प्राचीन परम्परा है, जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई थी और योगियों के द्वारा तंदुरुस्त रहने और ध्यान करने के लिए इसका निरन्तर अभ्यास किया जाता है। निकट जीवन में योग के प्रयोग के लाभों को देखते हुए संयुक्त संघ की सभा ने 21 जून को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस या विश्व योग दिवस के रुप में मनाने की घोषणा कर दी है।

हम योग से होने वाले लाभों की गणना नहीं कर सकते हैं, हम इसे केवल एक चमत्कार की तरह समझ सकते हैं, जिसे भगवान ने मानव प्रजाति को उपहार के रुप में प्रदान किया है। यह हमारी शारीरिक तंदुरुस्ती को बनाए रखता है, तनाव को कम करता है, भावनाओं को नियंत्रित रखते हुए नकारात्मक विचारों को भी नियंत्रित करता है। जिससे हम में भलाई की भावना, मानसिक शुद्धता, और आत्मविश्वास विकसित होता है। योग के अनगिनत लाभ हैं, हम यह कह सकते हैं कि योग मानवता को मिला हुआ एक ईश्वरीय वरदान है। आजकल लोगों के जीवन को बेहतर करने के लिए फिर से योग का अभ्यास करने की आवश्यकता है। दैनिक जीवन में योग का अभ्यास शरीर को आन्तरिक और बाहरी ताकत प्रदान करता है। यह शरीर के प्रतिरोधी प्रणाली को मजबूती प्रदान करने में मदद करता है, इस प्रकार यह विभिन्न और अलग–अलग बीमारियों से बचाव करता है। यदि योग को नियमित रुप से किया जाए तो यह दवाइयों का दूसरा विकल्प हो सकता है। यह प्रतिदिन खाई जाने वाली भारी दवाइयों के दुष्प्रभावों को भी कम करता है। प्राणायाम और कपाल–भाँति जैसे योगों को करने का सबसे अच्छा समय सुबह का समय है, क्योंकि यह शरीर और मन पर नियंत्रण करने के लिए बेहतर वातावरण प्रदान करता है।

यश औदिच्य
व्यवसाय सहायक,
उदयपुर क्षेत्र

कृषि ऋण माफी

''ज़मीन जल चुकी है,आसमान बाकी है,
सूखे कुएँ तुम्हारा इम्तहान बाकी है,
बादलों बरस जाना समय पर इस बार,
किसी की ज़मीन गिरवी,
तो किसी का लगान बाकी है।''

उपरोक्त पंक्तियाँ उस बेबस अन्नदाता की बेबसी को उजागर कर रही है जो संपूर्ण विश्व का पेट पालता है और मानव जीवन को बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है किंतु स्वयं कभी मौसम की मार के चलते तो कभी वित्त के अभाव में ऋण के बोझ तले दबकर मर जाता है। चिलचिलाती धूप और कड़कड़ाती ठंड की परवाह किये बिना किसान दिन-रात मिट्टी से सोना उगाने में लगा रहता है किंतु इस सोने को कभी किसी मंडी का बिचौलिया तो कभी कोई अनुबंधकर्त्ता लूटता है और अंततः राजनीतिक पार्टियाँ कृषि ऋण माफी जैसे हथियारों से इन्हें अपने वोट बैंक का हिस्सा बनती हैं।

कृषि ऋण माफी पहली नज़र में तो कृषकों की हितैषी प्रतीत होती है किंतु यह किसी भिखारी को दी गई उस भीख के समान है जो कुछ समय का सुकून तो दे सकती है किंतु थोड़े वक्त बाद उसे लाचार होकर लोगों के सामने हाथ फैलाना ही पड़ता है। आम चुनावों के आते ही कृषि ऋण माफी सुर्खियों में आ जाती है। राजनेता इसकी आड़ में अपनी रोटी सेकते हैं और ऋण माफी का झुनझुना कृषकों के हाथ में पकड़ाकर अपने पक्ष में वोट वसूलते हैं।

माननीय वी. पी. सिंह के काल से शुरू हुई यह कर्ज माफी की व्यवस्था आज कृषकों और स्वयं भारत के लिये एक नासूर बन चुकी है। चूँकि कृषि मूलतः राज्य का विषय है और राज्यों के पास पहले से ही वित्त का अभाव है, परिणामस्वरूप ऋण माफी राज्यों की अर्थव्यवस्था को तहस-नहस कर देती है। ऋण माफी राज्यों के अतिरिक्त संपूर्ण देश की अर्थव्यवस्था को भी अंदर से खोखला करती है। कृषि ऋण माफी में लगने वाले इस पैसे से अनेक कल्याणकारी योजनाएं पूर्ण नहीं हो पाती; रचना संबंधी व्यय में कमी आती है; देश का राजकोषीय घाटा बढ़ता है; एनपीए में डूबे हुए बैंकों की हालत और खराब हो जाती है जिससे बैंक नए उद्यमियों को ऋण नहीं दे पाते और उत्पादन गतिविधियों में कमी के फलस्वरुप संपूर्ण देश की आर्थिक गति मंद पड़ जाती है।

आर्थिक मंदी के दूरगामी परिणामों से विश्व स्तर में भी भारत की अर्थव्यवस्था के प्रति अविश्वास उत्पन्न होता है और विदेशी निवेश में कमी आती है जो कि हमारी अर्थव्यवस्था में गरीबी में आटा गीला होने जैसी परिस्थिति होती है। विभिन्न क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों द्वारा भी भारत को खराब क्रेडिट रेटिंग दी जाती है। इस प्रकार कृषि ऋण माफी अर्थव्यवस्था के लिये अत्यंत हानिकारक है।

बहरहाल कृषि ऋण माफी के कुछ सकारात्मक परिणाम भी प्राप्त होते हैं जैसे- कुछ कृषक कर्ज से मुक्ति पाकर उपज में वृद्धि द्वारा एक मज़बूत आर्थिक स्थिति प्राप्त करते हैं। कृषक इस ऋण माफी से बचे हुए पैसे का उपयोग कर कृषि हेतु नई तकनीक खरीद सकते हैं, उच्च गुणवत्ता वाले महँगे अनाज, उर्वरक, कीटनाशक आदि की सक्षमता द्वारा पैदावार में वृद्धि कर स्वयं की स्थिति मज़बूत कर देश में खाद्य सुरक्षा भी सुनिश्चित कर सकते हैं। किंतु यह लाभ मुख्यतः बड़े कृषकों तक ही सीमित रह जाता है।

प्रायः यह देखा गया है कि किसानों की कर्ज माफी कृषकों को कर्ज के दुष्चक्र में ही फँसाने का कार्य करती है। सरकार द्वारा एक बार कर्ज माफी से किसान चंद पलों के लिये राहत की साँस तो ले लेगा किंतु जब उसकी फसल पर मौसम की मार पड़ेगी (बाढ़, सूखा, तुषार अथवा ओलावृष्टि) और उसकी फसल बर्बाद होगी तो वह पाई-पाई के लिये मोहताज हो जाएगा और कर्ज के लिये दोबारा अपनी झोली फैलाएगा।

भारत की 42% भूमि पर कृषि कार्य किया जाता है जो कि विश्व में अमेरिका के पश्चात् द्वितीय स्थान पर है किंतु फिर भी हमारे देश के अन्नदाता की स्थिति अत्यंत दयनीय बनी हुई है। आए दिन समाचार पत्रों में कृषकों की आत्महत्या की खबरें इस भयावह स्थिति का बखान करती है। इस समस्या के मूल में जाकर देखें तो इसके कई कारण नज़र आते हैं।

सर्वप्रथम हमारे देश के कृषकों में तकनीकी जागरूकता का अभाव है तथा वे आज भी परंपरागत तरीके से खेती करते हैं जिससे उन्हें पर्याप्त लाभ की प्राप्ति नहीं होती है। इसके अतिरिक्त वे कीटनाशकों और उर्वरकों का अतिशय प्रयोग भी करते हैं जिससे आर्थिक लागत बढ़ने के साथ-साथ पर्यावरण को भी अत्यंत नुकसान होता है। अज्ञानता के चलते कृषक मृदा की गुणवत्ता के अनुसार फसलों की पैदावार नहीं करते जिससे उत्पादकता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, उदाहरण के लिये पंजाब, हरियाणा आदि राज्यों में पानी की कमी के बावजूद भी चावल की खेती की गई और इसके लिये सिंचाई हेतु नहरों और भूमिगत जल का अथाह प्रयोग किया गया, जिससे वहाँ की मृदा में लवणता बढ़ गई है तथा अनुपजाऊ कल्लर या रेह भूमि का विकास हो गया है।

कृषकों के अतिरिक्त सरकार भी इस स्थिति के लिए समान रूप से ज़िम्मेदार है। देश में कृषि से संबंधित अवसंरचना का अभाव है। हंगर इंडेक्स में दोयम स्थिति रखने वाले इस भारत में ना जाने कितना अनाज, भंडार गृहों के अभाव में बाहर पड़े-पड़े सड़ जाता है। परिवहन के साधनों में कमी के चलते किसान अपने खेतों से मंडी तक समय पर उत्पाद नहीं पहुँचा पाते जिससे उन्हें उचित कीमत नहीं प्राप्त होती है।

इसके अतिरिक्त जब फसल की बंपर पैदावार होती है तो उस स्थिति में मूल्य इतना गिर जाता है कि किसान की फसल की लागत तक नहीं मिल पाती। किसानों द्वारा सड़कों पर दूध की नदियाँ बहाने की घटनाएँ, मंडियों में प्याज, टमाटर आदि फेंकने की घटनाएँ हमारे देश में बड़ी आम हो गई हैं। बेचारा कृषक अधिक पैदावार पर रोए या हंसे उसे समझ नहीं आता; कैसी विडंबना है ये?

क्या सर्दी क्या गर्मी,
क्या दिन क्या रात,
मेहनत से जिसने दिया संपूर्ण सभ्यता को आधार,
वही अन्नदाता विवश है मरने को लेकर उधार।

कृषि आज लगातार घाटे का सौदा बन रही है इसलिये युवा वर्ग भी कृषि कार्यों के प्रति उदासीन हो गए हैं। देश की लगभग आधी आबादी अपनी आजीविका के लिये कृषि पर निर्भर है किंतु कृषि क्षेत्र का योगदान **GDP** में महज 14 प्रतिशत है। देश की आधी आबादी के लिये यह रोजी-रोटी का जरिया है, अतः इसमें सुधार अपेक्षित है और ऋण माफी के धन का प्रयोग कर यह सुधार किया जा सकता है।

कृषि क्षेत्र में असीम संभावनाएँ छुपी हुई हैं इसके लिये सरकार के सहयोग की आवश्यकता है। सरकार के द्वारा किसान क्रेडिट कार्ड, सॉइल हेल्थ कार्ड, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, संपदा योजना चलाई जा रही हैं किंतु इनका क्रियान्वयन ठीक से ना हो पाने के कारण इनसे प्राप्त लाभ नगण्य हैं। विभिन्न अध्ययन यह बताते हैं कि न्यूनतम समर्थन मूल्य का लाभ केवल 6% किसान ही उठा पाते हैं।

ऋण माफी के दुष्चक्र से कृषकों को बाहर निकालने हेतु अनुबंध कृषि को बढ़ावा दिया जा सकता है, जिसमें कृषकों की आय निश्चित हो जाएगी। इसके अतिरिक्त खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों और मेगा फूड पार्कों द्वारा हम बंपर पैदावार वाली फसलों का समुचित दोहन कर पाएँगे। वहीं ई-नाम जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के द्वारा कृषकों को बिचौलियों से बचाकर उन्हें फसलों का उचित मूल्य प्रदान कर सकते हैं। इसके

अतिरिक्त शून्य बजट कृषि, जैविक कृषि, मिश्रित कृषि आदि के द्वारा उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है। किसानों को नई तकनीकों हेतु प्रशिक्षित करने के लिए इस ऋण माफी के रुपए का प्रयोग किया जा सकता है।

वर्ष 2022 तक कृषकों की आमदानी को दोगुनी करने के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु छोटे व सीमांत किसानों को अन्य वैकल्पिक रोज़गार भी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है; जैसे– पशुपालन, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन आदि। इसके अतिरिक्त उन्हें कुसुम जैसी योजनाओं से जोड़कर बिजली के खर्च को कम करने हेतु प्रोत्साहित किया जा सकता है।

वस्तुतः लाल बहादुर शास्त्री जी ने नारा दिया था जय जवान जय किसान जिसका अर्थ था कि जिस प्रकार जवान सीमा पर गोलियाँ खाकर देश की रक्षा करता है उसी प्रकार एक किसान सर्दी व गर्मी की मार सहकर देश के अंदर देशवासियों की रक्षा करता है। अतः इस अन्नदाता को न तो वोट बैंक बनाने की ज़रूरत है और ना ही ऋण माफी का झुनझुना पकड़ाने की। यदि उसके लिये कुछ करना है तो उसमें इतनी क्षमता का विकास करने की आवश्यकता है कि वह न तो किसी ऋण के बोझ के तले दबे और न ही ऋण माफी के लालच में देश के प्रतिनिधियों का चयन करे।

''कितनी भी विकट हो परिस्थिति,
उम्मीद वो बांधे रहता है।
भटके न वो राह कभी,
लक्ष्य को साधे रखता है।
फिर भी ऐसी हुई है हालत,
आज हो रहा है कर्जदार।
कैसा मचा ये हाहाकार,
अन्नदाता की सुनो पुकार।''

हितेन्द्र कुमार मीना
प्रबंधक
(प्राथमिकता क्षेत्र विभाग)

सबसे बड़ा दर्जी है वो

सुख की सिलाई करता है वो
दुखों को 'रफू' करता है वो
समय की 'सुई' लेकर हाथों में
सब के घाव को भरता है वो !!
सबसे बड़ा दर्जी है वो

समस्याओं पर 'केंची' चलाकर
खुशियों के 'बटन' लगाता है वो
मैं चाहता हूँ सिर्फ अपना भला
सबका ध्यान रख जाता है वो !!
सबसे बड़ा दर्जी है वो

कष्टों को 'कतरन' सा काट काट कर
कतरन से आनंद की 'ओढनी' बनाता है वो
मैं इंसान का इंसान ही रहा फिर से
फिर से भगवान बन जाता है वो !!
सबसे बड़ा दर्जी है वो

'धागों' से सबके सपने बुनता
हर सिलाई उसे भविष्य चुनता है वो
हर किसी को सुख देता है वो
इसलिए दाता कहलाता है वो !!
सबसे बड़ा दर्जी है वो
सबसे बड़ा दर्जी है वो

दिलीप शर्मा
व्यवसाय सहायक
डूंगरपुर शाखा, बांसवाड़ा क्षेत्र

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

मौन सशक्त अभिव्यक्ति है

हम अक्सर ऐसे लोगों से मिलते हैं जो अपनी अभिव्यक्तियों में बेहद मुखर होते हैं। उनके पास हमेशा बातों का असीम भंडार होता है। किसी भी बातचीत में वे सुनते कम और बोलते ज़्यादा हैं। उन्हें किसी भी मुद्दे पर अपनी राय रखने में कोई संकोच या झिझक महसूस नहीं होती। आमतौर पर ऐसे लोगों को स्मार्ट व्यक्तियों की श्रेणी में रखा जाता है और अधिकांश लोग चाहते हैं कि वे भी उन्हीं की तरह निस्संकोची तथा मुखर व्यक्तित्व के धनी हों।

दूसरी तरफ, हम कुछ ऐसे व्यक्तियों से भी मिलते हैं जो आमतौर पर चुप रहते हैं। जिस मुद्दे पर मुखर व्यक्ति आपस में लड़ने-झगड़ने की मुद्रा में दिखाई पड़ते हैं, उन मुद्दों पर भी ये व्यक्ति एकदम शांत बने रहते हैं। आमतौर पर धारणा यही है कि मौन रहने वाले व्यक्तियों का व्यक्तित्व दबा हुआ होता है और प्रायः कोई भी व्यक्ति खुद को इस वर्ग में शामिल नहीं होने देना चाहता। अधिकांश माता-पिता अपने बच्चों को बचपन से ही मुखर होना सिखाते हैं और अगर कोई बच्चा शांत रहता हो तो यह उसके परिवार के लिये चिंता का सबब बन जाता है। कुछ लोग ऐसे भी होंगे जो सामान्यतः चुप रहना पसंद करते होंगे और उन्हें अपने शुभचिंतकों से बार-बार ऐसी सलाहें मिलती होंगी कि वे अपने व्यक्तित्व को सुधारने के लिये गंभीर प्रयास करें।

अत्यधिक मुखर होना अनिवार्यतः अच्छे व्यक्तित्व की निशानी नहीं है और प्रायः शांत बने रहना अनिवार्यतः दब्बू होने का प्रमाण नहीं है। अगर मुखरता वाचालता के स्तर को छूती हो और चिंतन की गहराई से वंचित हो तो वह व्यक्तित्व का सकारात्मक पक्ष न होकर एक वैयक्तिक और सामाजिक समस्या बन जाती है। दूसरी ओर, अगर किसी व्यक्ति का मौन आत्मविश्वास के अभाव से नहीं बल्कि चिंतन की गहराई से पैदा हुआ हो तो वह चिंता की नहीं बल्कि व्यक्ति और समाज के लिये फायदे की बात है। हमें इस भयानक सरलीकरण से बचना चाहिये कि मुखर या बहिर्मुखी व्यक्ति अनिवार्यतः शांत या अंतर्मुखी व्यक्ति से बेहतर होता है।

व्यक्ति के परिपक्व होने की प्रक्रिया में उसे यह समझ आना चाहिये कि हर समय मुखरता काम्य नहीं होती। कई ऐसी स्थितियाँ भी होती हैं जहाँ मौन ही सबसे अच्छी अभिव्यक्ति बनकर सामने आता है। हिंदी के प्रसिद्ध कवि 'अज्ञेय' ने लिखा भी है- मौन भी अभिव्यंजना है/ जितना तुम्हारा सच है/उतना ही कहो। हमें यह समझना चाहिये कि किन संदर्भों में मौन हमारी ताकत बन जाता है। अगर यह समझ जाएंगे तो निस्संदेह हमारे परिपक्व होने की प्रक्रिया ज़्यादा बेहतर और संगत हो जाएगी।

मौन की पहली ज़रूरत वहाँ पड़ती है जहाँ व्यक्ति भावनाओं के चरम स्तर पर होता है। हमारी भाषा सामान्य स्थितियों में भले ही संवाद का सेतु बन जाती हो पर गहन भावनात्मक क्षणों में वह निरर्थक हो जाती है। मौन का दूसरा महत्त्व वहाँ उभरता है जहाँ हमारी मनःस्थिति एकआयामी न होकर जटिल हो जाती है। सरल मनःस्थितियों को भाषा के स्तर पर व्यक्त करना एकदम आसान होता है किंतु जैसे ही मनःस्थिति जटिल होती है, वैसे ही हमारी भाषा असहाय हो जाती है। मौन के तीसरे महत्त्व का अहसास उन्हें होता है जो रहस्यवाद या अध्यात्म के रास्ते पर बढ़ते हैं। बड़े-बड़े रहस्यवादियों ने रहस्यात्मक अनुभूति से गुजरने के बाद यह माना है कि उस अनुभूति को भाषा के माध्यम से वर्णित नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि सभी रहस्यवादी अपनी अनुभूतियों के बारे में मौन रहना ही पसंद करते हैं।

कबीरदास ने कहा है कि ईश्वर की अनुभूति **'गूंगे के गुड़'** के समान है। जिस तरह कोई गूंगा व्यक्ति गुड़ खाकर अद्भुत आनंद तो महसूस करता है किंतु उस आनंद की अभिव्यक्ति करने में असमर्थ होता है, वैसे ही रहस्यवादी व्यक्ति अपनी अनूठी अनुभूति को शब्दों की असमर्थ भाषा में व्यक्त नहीं कर पाता। मौन का चौथा लाभ यह होता है कि हमारा संबंध कुछ समय के लिये बाहरी दुनिया से कट जाता है और हमें खुद अपने-आप से संवाद करने का मौका मिलता है। जो लोग जीवन भर बोलते ही रहते हैं, उन्हें इस बात का अहसास नहीं है कि उन्होंने क्या खो दिया है। बोलने के सुख से कहीं बड़ा मौन का सुख है, बशर्ते उस मौन के भीतर अपने ही साथ आंतरिक संवाद होता रहे। यही कारण है कि महात्मा गांधी सहित बहुत से महान व्यक्तियों ने जीवन के कई अवसरों पर मौनव्रत का सहारा लिया।

मौन के ढेरों फायदे हैं। अगर आप किसी को महत्त्व न देना चाहते हों तो उसकी हरकतों पर मौन बने रहिये। याद रखिये कि अगर आप किसी का विरोध करते हैं तो इसमें निहित है कि आप उसे महत्त्व देते हैं। किसी को महत्त्व नहीं देने का सबसे अच्छा तरीका उसके प्रति तटस्थ या निरपेक्ष हो जाना है और इसके लिये मौन से बढ़कर कोई हथियार नहीं है। इसी तरह, अगर आप किसी मुद्दे पर अनिर्णय की स्थिति में हैं तो तब तक मौन ही रहिये जब तक आपकी अंतरात्मा कोई सीधा और स्पष्ट निर्णय न सुना दे। अगर आप अनिर्णय की स्थिति के दौरान कोई प्रतिबद्धता जाहिर कर देंगे तो वह आगे चलकर आपके लिये गले की फाँस बन जाएगी।

सार यह है कि मौन भी अभिव्यक्ति का ही एक प्रबल रूप है जिसके महत्त्व की अनदेखी नहीं करनी चाहिये। कोशिश करनी चाहिये कि हम कम किंतु काम का बोलें। हमारी बातों में विस्तार कम और गहराई ज़्यादा हो। ज्यादा सोचना और कम बोलना समझदारी का लक्षण है और बिना सोचे-समझे बोलते रहना मूर्खता का। चिंतन और अभिव्यक्ति की परिपक्वता की इस यात्रा में मौन का महत्त्व समझना एक अनिवार्य चरण है जिससे हम बच नहीं सकते।

अशोक विजयवर्गीय
सहायक महाप्रबंधक एवं पूर्व क्षेत्रीय प्रमुख
सवाईमाधोपुर क्षेत्र

मेरी प्यारी बेटियां

चिड़ियों की झुंड सी चहचहाती है बेटियां,
ड्रेसिंग टेबल के आगे नीले-पीले आँचल उड़ाती है बेटियां,
आँगन की तुलसी बनकर घर को महकाती है बेटियां,
पायल की रुनझुन सी गुनगुनाती है बेटियां,
किसी भी मकान को घर बनाती है बेटियां,
पूजे होंगे कई देवी-देवता मैंने, तब तुमको है पाया,
क्यों कहते हो बेटी को धन है पराया,
यह तो मां की ममता की है छाया,
जो नारी के मन, आत्मा व शरीर में है समाया।।

कनक राय चोपड़ा
नेहरू पैलेस शाखा, जयपुर

सफलता की कहानी–

हर पैरामीटर में उत्कृष्ट कार्य करते हुए शाखा स्तर पर जारी मासिक व्यावसायिक रेटिंग प्रणाली में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाली शाखा

सीलोरा शाखा, अजमेर

''अंधेरे से क्यों डरते हो दोस्त, एक दिया जला कर तो देखो,''
मंजिल दूर हुई तो क्या हुआ, पहला कदम बढ़ा कर तो देखो।

1. अजमेर क्षेत्र बैंक ऑफ बड़ौदा का ऐसा पहला क्षेत्र है जिसमें कॉर्पोरेट कार्यालय, मुंबई द्वारा लागू क्षेत्रीय रेटिंग प्रणाली की तर्ज पर शाखा स्तरीय मासिक व्यवसायिक रेटिंग प्रणाली लागू की है और आप की सिलोरा शाखा ग्रामीण शाखा होते हुए भी इस रेटिंग प्रणाली में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाली पहली शाखा बनी, इस सफलता का राज बताएं?

मैं इस विशिष्ट उपलब्धि हेतु सबसे पहले अधिक श्रेय शाखा की टीम को देना चाहता हूँ। मेरी टीम एकजुट होकर और लक्ष्य को केंद्र में रखकर काम करती है और किसी भी अभियान में हम आरंभ से ही प्रयास शुरू कर देते हैं जिस कारण सुलभता से लक्ष्य प्राप्त होते हैं। साथ ही हमारे आदरणीय क्षेत्रीय प्रमुख श्री एस के बिरानी और क्षेत्रीय कार्यालय, अजमेर की मजबूत टीम का जो सकारात्मक सहयोग प्राप्त होता है उससे लक्ष्य प्राप्ति के लिए रणनीति बनाने में आसानी रहती है।

2. एम कनेक्ट अभियान में आपकी शाखा ने अंचल स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, इस हेतु क्या विशेष रणनीति अपनाई गई?

डिजिटाइजेशन 21वीं सदी की बैंकिंग की सबसे बड़ी जरूरत है। हमारी बैंक का एम कनेक्ट बैंकिंग उद्योग में सबसे अधिक सुरक्षित और यूजर फ्रेंडली है। हमने ग्राहकों को बताया कि वो घर/खेत/ऑफिस में बैठे 190 से अधिक बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं; इसमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण सहयोग हमारे हैड कैशियर श्री बिरदीचंद का प्राप्त हुआ जो ग्राहकों को इस एप्लिकेशन की विशिष्टता समझाने में सफल रहे। सभी बीसी को भी हमने अच्छे से इस एप्लिकेशन की उपयोगिता बताई ताकि नजदीकी गावों में भी इसे प्रसारित किया जा सके। ग्राहक के हितों को केंद्र में रखकर समझाने के कारण हम इस उद्देश्य में सफल रहे।

3. ग्राहक सेवा में भी आपकी शाखा का रिकॉर्ड अत्यंत सकारात्मक पाया गया है, किस प्रकार बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करते है ?

हम सेवा क्षेत्र से जुड़े हैं इसलिए ग्राहक को संतुष्ट करना और बेहतर सेवा देना हम सभी का परम कर्तव्य है। शाखा स्तर पर हमारा प्रयास रहता है कि किसी भी शिकायत को आरंभिक स्थिति में ही निस्तारित कर दिया जाए ताकि विभिन्न पोर्टल तक शिकायत पहुँचने की स्थिति न आए। हमारी शाखा के सभी स्टाफ़ सदस्यों ने ग्राहकों से इस प्रकार आत्मीय संबंध स्थापित किए हुए हैं कि कोई भी समस्या होने पर ग्राहक शाखा में अथवा फोन पर संपर्क करता है और हम विशेष प्रयास कर उस समस्या का निस्तारण करते हैं।

क्षेत्रीय प्रबंधन के विशेष प्रयासों और प्रोत्साहन से हमारे द्वारा शाखा में सकारात्मक माहौल बनाने का प्रयास किया गया है, नियमित अंतराल पर विशेष साफ सफाई करवाई जाती है जिससे आगंतुकों में सकारात्मकता का संचार होता है।

4. स्टाफ़ के बीच बेहतर समन्वय किस प्रकार स्थापित किया गया है?

किसी भी टीम की सफलता के पीछे सबसे प्रमुख भूमिका उनके बीच आपसी समन्वय की होती है। हम सभी बैंक के काम के उद्देश्य से शाखा / कार्यालय में आते हैं अतः यह प्रयास रहता है कि एक दूसरे का सहयोग करते हुए काम करें ताकि कोई भी साथी किसी भी पैरामीटर में पीछे न रहे। हमारी टीम को प्रोत्साहित करने में क्षेत्रीय प्रमुख की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है, अपने शाखा दौरे के दौरान वे प्रत्येक संवर्ग के स्टाफ़ और साथ ही बीसी को भी प्रोत्साहित करते हैं। हाल ही में क्षेत्रीय कार्यालय, अजमेर द्वारा किशनगढ़ में आयोजित सम्मान समारोह में शाखा के स्टाफ़ सदस्यों और बीसी भाइयों को सम्मानित किया गया।

5. काम के दौरान आपकी सर्वोच्च प्राथमिकता क्या रहती हैं?

काम के दौरान हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता क्षेत्रीय प्रबंधन की अपेक्षाओं के अनुसार गुणवत्ता के साथ उस काम को सम्पन्न करने की रहती है। मेरा यह मानना है कि काम को लंबित रखने का अर्थ है **''काम को बोझ बनाना''**; काम जब बोझ बन जाता है तो कठिन हो जाता है।

ग्राहकों को त्वरित ग्राहक सेवा देने और क्षेत्रीय प्रबंधन के मार्गदर्शन और क्षेत्रीय कार्यालय की टीम के सहयोग से हम दिए गए कार्य और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हम निरंतर प्रयासरत रहते हैं।

6. अन्य शाखाओं को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

आज के समय में शाखा में कार्य करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है, आपको त्वरित ग्राहक सेवा के साथ-साथ बैंक के हितों और व्यावसायिक लक्ष्यों को समय पर पूरा करना आवश्यक होता है अतः टीम के बीच समन्वय, टीम के बीच कार्य का उचित आवंटन, महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर निपटान करने का विशेष ध्यान रखा जाये तो बेहतर रहता है।

क्या आप जानते हैं

प्रश्न 1: विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप कौन सा देश है ?

प्रश्न 2: रेल पथ के मीटर गेज की चौड़ाई कितनी होती है ?

प्रश्न 3: किस जानवर को रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है ?

प्रश्न 4: बाणभट्ट किस सम्राट के राजदरबारी कवि थे ?

प्रश्न 5: वायुमण्डलीय दाब मापने का पैमाना क्या है ?

प्रश्न 6: रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भारत के अलावा किस देश का राष्ट्रीय गान लिखा है ?

प्रश्न 7: दिल्ली की सुल्तान रजिया सुल्तान किसकी पुत्री थी ?

प्रश्न 8: बिहार का शोक किस नदी को कहा जाता है ?

प्रश्न 9: प्लासी का युद्ध कब हुआ था ?

प्रश्न 10: बुर्ज खलीफा का मालिक कौन है ?

प्रश्न 11: भारत में निजी क्षेत्र का सबसे बड़ा बैंक कौन सा है ?

प्रश्न 12: कंचनगंगा पर्वत शिखर कहां स्थित है ?

प्रश्न 13: प्रथम भारतीय फ़िल्म 'राजाहरिश्चंद्र' के निर्माता कौन थे ?

प्रश्न 14: भारतीय नेपोलियन की उपाधि किसे दी गई है ?

प्रश्न 15: चीनी यात्री फाहियान किस गुप्त शासक के शासनकाल के दौरान भारत आया था ?

प्रश्न 16: 'ए मेरे वतन के लोगो' देशभक्ति गीत किसने लिखा है ?

प्रश्न 17: 'मंदिरो की पूण्यभूमि' भारत के किस राज्य को कहा जाता है ?

प्रश्न 18: गुप्त काल में किस धातु के सर्वाधिक सिक्के जारी किए गए थे ?

प्रश्न 19: रंगोली कहां की प्रमुख लोक कला है ?

प्रश्न 20: हॉकी टीम की एक टीम में कितने खिलाड़ी होते हैं ?

प्रश्न 21: कंप्यूटर की-बोर्ड के कौन से बटन पर उसका नाम नहीं होता है ?

प्रश्न 22: भोजन में उपस्थित ऊर्जा को किसमें मापा जाता है ?

प्रश्न 23: देश की प्रथम महिला लोकसभा अध्यक्ष का क्या नाम है ?

प्रश्न 24: मनुष्य के शरीर में सबसे ज्यादा मात्रा में पाए जाने वाला तत्व क्या है ?

प्रश्न 25 : भारत का केन्द्रीय बैंक कौन सा है ?

प्रश्न 26: भारत के किस पब्लिक सेक्टर बैंक की विदेशों में सर्वाधिक शाखाएँ हैं ?

प्रश्न 27: किस समिति के सिफारिश के आधार पर NBRD की स्थापना की गई थी ?

प्रश्न 28: बैंकिंग क्षेत्र किस क्षेत्र के अंतर्गत आता है ?

प्रश्न 29: बैंक दर से आप क्या समझते हैं ?

संकलन-
राजभाषा विभाग, भरतपुर क्षेत्र

1. एशिया
2. 1 मीटर
3. ऊंट
4. हर्षवर्धन
5. बैरोमीटर
6. बांग्लादेश
7. शम्स-उद-दिनइल्तुतमिश
8. कोशी
9. 1757ई.
10. एचएच शेख खलीफा बिन जायद
11. आईसीआईसीआई बैंक
12. सिक्किम
13. दादासाहेब फाल्के
14. समुद्रगुप्त
15. चन्द्रगुप्त II
16. प्रदीप
17. तमिलनाडु
18. सोना
19. महाराष्ट्र
20. 11
21. स्पेस बार
22. कैलोरी
23. मीरा कुमार
24. ऑक्सीजन
25. भारतीय रिजर्व बैंक
26. बैंक ऑफ़ बड़ौदा
27. शिवरामन समिति
28. सेवा क्षेत्र
29. वह ब्याज दर जिस पर केंद्रीय बैंक दूसरे बैंकों को ऋण देता है

बैंक के विकास में हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं की भूमिका

'समस्त भारतीय नदियां, उपनद हैं और हिंदी महानदी है।'

– रवीन्द्र नाथ टैगोर

मानव विकास परंपरा में उसके मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ 'भाषा' की भूमिका भी मुख्य रही है। भाषा के बिना मनुष्य, समाज और राष्ट्र गूंगा कहा जाता है। वस्तुतः 'भाषा' राष्ट्र को जोड़ने, संस्कृति और समाज को संगठित करने तथा अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने का सशक्त आधार होती है। भाषा का मानव, समाज, संस्कृति, सभ्यता और बाजार से घनिष्ठ संबंध रहा है। संप्रति, हिंदी भी भाषा के उक्त गुणधर्मों में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रही है। हिंदी का संबंध हमारे देश निर्माण से है, देश की आर्थिक, सामाजिक, सामरिक, व्यावसायिक, धार्मिक, सांस्कृतिक शक्ति के साथ –साथ व्यापारिक शक्ति से भी है।

राष्ट्रीय एकता के आधार स्तंभ के रूप में हिंदी की अन्य भारतीय भाषाओं से साम्यता एवं इनकी जननी के रूप में संस्कृत से इन सभी के संबंध ने हमारे देश के स्वतंत्रता आंदोलन के समय महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। सन् 1857 के विद्रोह से लेकर 1947 तक के 90 वर्षों की इस सफरनामे में हिंदी की महती भूमिका थी जिसने संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोया और समानांतर रूप से एक संपर्क भाषा (Lingua franca=Link Language) के रूप में अपना सांस्कृतिक, सामाजिक एवं व्यापारिक विकास भी किया।

देश का आर्थिक विकास : भाषा के परिप्रेक्ष्य में–

किसी भी राष्ट्र का आर्थिक विकास उसकी वैश्विक स्थिति पर निर्भर करता है। भारतीय भाषाओं की वैश्विक बाजार में भागीदारी एवं वैश्विक पहुंच इस हेतु महत्वपूर्ण चर्चा का विषय है।

संप्रति, हिंदी जनभाषा, संपर्क भाषा, संचार की भाषा, व्यापार–व्यवसाय की भाषा, प्रचार–प्रसार की भाषा, विपणन की भाषा, सरकारी दफ्तरों में काम–काज की भाषा है। व्यवसाय विकास में हिंदी की भूमिका का सही आकलन इसके व्यापक प्रयोग से ही आंका जा सकता है। वैश्विक क्षितिज पर हिंदी पूरी तरह से छायी हुई है। संप्रति, हिंदी, सूरीनाम, फीजी, सिंगापुर, ट्रिनिनाड एंड टोबैगो, दक्षिण अफ्रीका, मारीशस, गुयाना, पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, नेपाल आदि देशों में यह संपर्क भाषा के रूप मे प्रयोग में लायी जाती है।

विश्व फलक पर भारतीय भाषाओं का अध्ययन–अध्यापन :

विश्व के लगभग 93 देशों में हिंदी बोली, समझी और पढ़ी जा रही है। **अमेरिका** में हार्वर्ड, पेन, मिशिगन, येल आदि जैसे लगभग 75 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है, इसके अलावा यहां हिंदी के लिए कई संस्थाए भी कार्य कर रही हैं जिनमें अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति, हिंदी न्यास आदि प्रमुख हैं। इतना ही नहीं वहां कई हिंदी पत्रिकाएं जिनमें विश्व, सौरभ, हिंदी जगत, क्षितिज, विश्व विवेक, बाल भारती, हिंदी चेतना आदि प्रमुख हैं। यहां हिंदी लेखकों एवं कवियों की भी बहुत बडी संख्या है। जापान का भारत से आध्यात्मिक जुडाव है और यह जापान में हिंदी शिक्षण का बहुत बड़ा आधार है। जापान में लगभग साढ़े आठ सौ कॉलेजों में हिंदी पढाई जाती है। इसी अनुक्रम में कनाडा, रूस, नीदरलैंड, पौलेंड, सूरीनाम, कोरि या, इटली, बल्गारिया, फिनलैड, फीजी, नेपाल और चीन, ब्राजील, मलेशिया, सऊदी अरब, सिंगापुर, सूडान, स्पेन, हांगकांग आदि में हिंदी के अध्ययन–अध्यापन की समुचित व्यवस्था है। हिंदी के अध्ययन एवं अध्यापन इसकी वैश्विक आवश्यकता का विशेषतः व्यापारिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं का समर्थन करते हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को सातवीं राजभाषा बनाए जाने का मुहीम **मॉरीशस** सरकार एवं भारत सरकार के संयुक्त प्रयास से चल रहा है और इस क्षेत्र में कुछ सकारात्मक परिणाम भी सामने आए हैं। हिंदी की इस व्यापकता एवं आवश्यकता के उक्त प्रमाणों के पश्चात् व्यवसाय विकास में इसकी भूमिका निर्विवाद है।

भारतीय भाषाएं और बाज़ार (व्यवसाय) और ग्राहक

संविधान के आठवी अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारतीय भाषाओं के अलावा भी हमारे देश में अन्य भाषाएं विद्यमान हैं किंतु इन्हें संवैधानिक रूप से भाषा का दर्जा अप्राप्त है। यद्यपि देश के आर्थिक विकास में, भूमंडलीकरण, उदारीकरण, औद्योगीकरण, बाजारवाद, साक्षरता,

शिक्षा के प्रसार, लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास आदि से वाणिज्य और व्यवसाय की प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में और जन व्यवहार की भाषा के रूप में हिंदी का एवं भारतीय भाषाओं/क्षेत्रीय भाषा का संवर्धन हुआ है। वाणिज्य, शिक्षा के विकास, व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा, विज्ञान, बैंकिंग और डाक तार सेवाओं आदि में हिंदी के प्रयोग क्षेत्र में अभिवृद्धि हुई है। व्यावसायिक प्रयोग क्षेत्र में प्रयुक्त भाषा का जो कार्य क्षेत्र विकसित हुआ है उसमें व्यापार, व्यवसाय, उद्योग, परिवहन, बैंक, कंपनी, सहकारिता और व्यावसायिक विज्ञापन, समाचार अदि का उल्लेखनीय योगदान है।

वैश्वीकरण और भारतीय भाषाएं एवं ग्राहक सेवा

वैश्वीकरण की प्रक्रिया में सात तत्व शामिल हैं, ये हैं – आधुनिकीकरण की प्रक्रिया, दूसरा मध्यम वर्ग, तीसरा बाजार, चौथा संचार माध्यम और पांचवा बहुराष्ट्रीय कंपनियां, छठा आप्रवासन और सातवां संपन्नता। इनमें से **बाजार और संचार** ये दोनो भाषाओं के विशेषत: हिंदी के पूर्णत: अनुकूल हैं और शेष चीजें जैसे कि मध्यम वर्ग, आधुनिकीकरण, आप्रवासन आदि भी अनुषंगी रूप से हिंदी के अनुकूल हैं। आशय यह है कि तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्था, मीडिया के वर्चस्व, वैश्वीकरण और उदारीकरण ने हिंदी के विकास में अहम भूमिका निभायी है तो दूसरी ओर हिंदी ने भी वैश्वीकरण और उदारीकरण को भारतवर्ष में ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में नया रूप दिया है। उदारीकरण ने हिंदी को बाजार की भाषा बनाया क्योंकि विश्व के पूंजीवादी देशों की व्यावसायिक दृष्टि भारत को एक बडे बाजार के रूप में देखती है और बाजार में मुनाफे के लिए हिंदी को बाजार की भाषा बनाना जरूरी है। पिज्ज़ा हो या बर्गर बेचने के लिए हिंदी का ही सहारा लेना पड़ता है। हिंदी के विस्तार एवं उसे व्यवसाय की दृष्टि में सबसे ऊंचा दर्जा देने का सबसे बड़ा श्रेय मीडिया तथा हिंदी फिल्मों का भी है। विदेशी चैनलों को बहुत जल्दी यह आभास हो गया कि भारत में टेलीविजन पर केवल अंग्रेजी कार्यक्रम दिखाकर वे लाभ नहीं कमा सकते इसलिए स्टार, जीटीवी, सोनी आदि सभी में हिंदी धारावाहिक तथा हिंदी समाचार प्रस्तुत करने की होड़ सी लग गयी। विदेशी फिल्में चाहे वे हॉलीवुड की अंग्रेजी फिल्में हों या जर्मन, फ्रेंच इत्यादि भाषा की निर्मित फिल्में हो, उन्हें अपने व्यवसाय बढाने के लिए इन्हें हिंदी में डब करना पड़ता है। सभी प्रकार के टीवी कार्यक्रमों में हिंदी का बोलबाला है अर्थात टी आर पी बढानी है तो हिंदी का सहारा आवश्यक है। एफ एम रेडियों पर भी हिंदी ने खूब धूम मचाया है।

1980 और 1990 के दशक में भारत में उदारीकरण, वैश्वीकरण तथा औद्योगीकरण की प्रक्रिया तेज हुई, परिणामस्वरूप अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत आईं और हिंदी के प्रयोग को बल मिला। मीडिया महारथी **रूपर्ट मरडोक** स्टार चैनल लेकर आए जो कि बड़ी धूमधाम से अंग्रेजी में शुरू तो हुआ लेकिन आज हिंदी की सत्ता पूर्णत: उन चैनलों पर काबिज है। इसी तर्ज पर सोनी, जी टीवी आदि भी आए और उन्हें भी अन्तत: हिंदी की ओर मुड़ना ही पड़ा क्योकि इन्हें अपनी दर्शक संख्या बढानी थी, व्यापार एवं लाभ बढाना था। आज टीवी चैनलों एवं मनोरंजन की दुनिया में हिंदी सबसे अधिक मुनाफे की भाषा है। कुल विज्ञापनों का लगभग 75 प्रतिशत हिंदी माध्यम में ही है। स्टार प्लस, जीटीवी, जी न्यूज़, स्टार न्यूज, डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफिक आदि टीवी चैनल अपने कार्यक्रम हिंदी में ही दिखा रहे है। हिंदी और व्यापार के बारे में चर्चा करते हुए एक सर्वे में कहा गया है कि **'कौन बनेगा करोड़पति'** की लोकप्रियता ने कमाई तथा प्रसिद्धि के झंडे गाड़ दिए एवं अनेक कीर्तिमान भंग कर दिये तथा आने वाले समय के लिए हिंदी के सुखद भविष्य के सपने संजो दिए हैं।

भारत की आर्थिक क्षमता एवं उपभोक्ता वर्ग की विशालता ने भी हिंदी की भूमिका को व्यापार एवं व्यवसाय तथा लाभप्रदता के लिए बहुत बड़ा स्थान दिया है। भारत कॉटन तथा कॉटन यार्न का उत्पादक देश है और विश्व में तीसरे नंबर पर है। इसी प्रकार जिनेरिक औषधियों तथा टीकों की व्यापक रूप से उपलब्धता, विश्व में इस्पात का आठवां सबसे बड़ा उत्पादक देश तथा सीमेंट के क्षेत्र मे दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश होने का गौरव भारत को प्राप्त है। पेट्रोलियम, कृषि तथा बैंकिंग क्षेत्र में भी भारत ने दुनिया में अपना लोहा मनवा लिया है। उक्त सभी तथ्य इस ओर इंगित करते हैं कि भारत विश्व में एक आर्थिक शक्ति के रूप में तेजी से उभर रहा है। भूमंडलीकरण के इस चुनौती भरे युग में विज्ञापनों के माध्यम से अपने–अपने उत्पादों को बेचने की जबरदस्त होड़ लगी हैं। जहां एक ओर भारत की अनेक क्षेत्रों में निर्यात की अपार संभावनाएं हैं वहीं दूसरी ओर उपभोक्ता बाजार भी बडी तेजी से बढ रहा है । बहुराष्ट्रीय कंपनियों को इस विशाल देश में अपने उत्पादों को बेचने की प्रबल संभावनाएं दिखती है और इन सभी संभावनाओं को प्रबल करती है हिंदी।

लोक प्रचार माध्यम का अपने श्रोताओं/दर्शकों आदि पर सीधा एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। संचार माध्यम निम्नलिखित रूपों में आज हमारे सामने प्रस्तुत हैं– विज्ञापन ब्रोशर, पत्र पत्रिकाएं, रंगमंच, चित्रपट, आकाशवाणी, दूरदर्शन और प्रचार उत्सव, सम्मेलन परिसंवाद आदि। उक्त सभी से किसी भी स्तर के संगठन के व्यापार–व्यवसाय का सीधा संबंध है, जिसमें हिंदी की भूमिका निर्विवाद है।

बैंकों के परिप्रेक्ष्य में हिंदी एवं भारतीय भाषाओं की भूमिका–

बैंक के परिप्रेक्ष्य में हिंदी एवं भारतीय भाषाओं व्यवसाय विकास

एवं लाभप्रदता में बहु आयामी रूप से सहायक है। बैंकिंग के निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्रों में हिंदी की भूमिका सर्वविदित है।

1. **ग्राहकों की भाषा**
2. **विपणन की भाषा**
3. **प्रचार-प्रसार की भाषा**
4. **जनसंपर्क की भाषा**
5. **सरकारी दफ्तरों एवं राज्य सरकार की राजभाषा**
6. **बाजार की भाषा**
7. **संपर्क भाषा**
8. **तकनीकी रूप से सक्षम भाषा**

इसके अतिरिक्त हिंदी एवं भारतीय भाषाओं की उपादेयता अग्रलिखित क्षेत्रों में भी है।

1. **एनपीए वसूली में**
2. **वित्तीय समावेशन**
3. **नए उत्पादों के प्रचार प्रसार में।**

हमारे देश की अर्थव्यवस्था का मूलाधार कृषि है और कृषि तथा कृषक वर्ग को ग्राहक आधार बनाने में हिंदी एवं भारतीय भाषाओं की भूमिका निर्विवाद रूप से सत्य है।

वित्तीय समावेशन एवं वित्तीय शिक्षण के रूप में देखा जाए तो हिंदी एवं भारतीय भाषाओं की भूमिका सर्वविदित है क्योंकि वित्तीय समावेशन और शिक्षण का लक्ष्स जनमानस की सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा के प्रयोग के बिना संभव नहीं है, और इस हेतु सभी पैमाने पर हिंदी एवं भारतीय भाषाएं खरी उतरती है।

होली, ईद, दीवाली, रक्षाबंधन, करवा चौथ, बसंत पंचमी, भैया दूज, आदि तीज-त्यौंहारों की भाषा है और त्यौहार बहुल इस देश में त्योहारों से संबंधी अपने उत्पादों एवं नवाचारों तथा नवोन्मेषी प्रयोगों की बिक्री में भी हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाएं सहायक बन व्यवसाय- विकास करती है।

उपसंहार

हिंदी की अस्मिता विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों से मिलकर बनी है। इसी संबंध में गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था कि **'समस्त भारतीय नदियां, उपनद हैं और हिंदी महानदी है।'** कबीर से लेकर प्रेमचंद और बाबा नागार्जुन का साहित्य इसका दृष्टांत है। हिंदी भाषा के विकास और प्रसार में इन्ही बोलियों, क्षेत्रीय भाषाओं का विशेष महत्व है। राजभाषा 1968 के संकल्प के अनुसार भी हिंदी का संवर्धन क्षेत्रीय भाषाओं के संवर्धन के साथ-साथ करने का प्रावधान है। मनोवैज्ञानिक एवं मानसशास्त्रीय आधार पर भी यह पाया गया है कि मातृभाषा का प्रयोग लोगों के जुड़ाव का सबसे सशक्त माध्यम है और ये सारे क्षेत्रीय भाषाएं संयुक्त रूप से हिंदी का समर्थन ही करती हैं।

समाजशास्त्री **के. एल. शर्मा** ने एनसीआरटी की समाज शास्त्र की किताब मूल रूप से हिंदी में लिख कर साबित कर दिया कि स्कूल कॉलेज की समाजविज्ञान की किताबें हिंदी में लिखना संभव है। ध्यान, योग, आसन और आयुर्वेद के साथ-साथ इनसे संबंधित हिंदी शब्दों का भी विश्व की दूसरी भाषाओं में विलय हो रहा है। भारतीय संगीत (शास्त्रीय एवं आधुनिक दोनो हीं), हस्तकला, भोजन, वस्त्रों की विदेशी मांग के रास्ते हिंदी से ही खुलते हैं। लगभग हर देशों में योग, ध्यान और आयुर्वेद के केंद्र खुल गए हैं और इन सबके लिए हिंदी की आवश्यकता हर स्तर पर महसूस की जा रही है। इसके अलावा देवनागरी रूप में हिंदी की वैज्ञानिकता को विश्वभर में स्वीकार किया गया है। हिंदी की तकनीकी और सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में यूनीकोड के पश्चात आई क्रांति से स्थिति और भी मजबूत हुई है। हिंदी में वेबसाइटों का निर्माण, ब्लॉग तथा इंटरनेट पर हिंदी के प्रवेश ने कई क्षेत्रों में हिंदी के पहुंच को बहुगुणित किया है। हिंदी की प्रयोजनमूलक प्रासंगिकता एवं आवश्यकताओं ने ही प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से व्यवसाय विकास में हिंदी की भूमिका निर्धारित की है। हिंदी का प्रयोजनमूलक आधार की नींव समस्त भारतीय भाषाएं ही हैं।

समग्र रूप से अवलोकन पश्चात यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हिंदी आज राष्ट्रीय एकता, समन्वय, व्यवसाय विकास, आर्थिक विकास एवं लाभप्रदता के लिए आवश्यक है। यह आज बाजार, समाज, राष्ट्र के साथ पूरे विश्व की भाषा बन चुकी है साथ ही उपनद के रूप में अन्य भारतीय भाषाओं ने देश के आर्थिक योगदान के साथ-साथ सामरिक, सामाजिक एवं व्यापारिक योगदान भी दिया है।

साभार एवं स्रोत:

1. **'भाषा विज्ञान' - डॉ. भोलानाथ तिवारी**
2. **इंटरनेट से सामग्री आदि**

सोमेन्द्र यादव
मुख्य प्रबन्धक, राजभाषा एवं जन संपर्क
अंचल कार्यालय, जयपुर

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

आंचलिक गतिविधियाँ

एस एल बी. सी. द्वारा एक दिवसीय टीकाकरण शिविर आयोजित

बैंक ऑफ बड़ौदा के संयोजन में कार्यरत राज्य स्तरीय बैंकर्स कमेटी, राजस्थान (एसएलबीसी) द्वारा बैंकिंग स्टाफ के कोविड–19 वैक्सीनेशन के लिए जयपुर क्षेत्र की हौम्योपैथी शाखा एवं बड़ौदा स्वरोजगार विकास संस्थान, जयपुर में एक दिवसीय टीकाकरण शिविर आयोजित किए गए।

अजमेर क्षेत्र द्वारा 'एक नई शुरुआत' अभियान का शुभारंभ।

दिनांक 3 अप्रैल को क्षेत्रीय कार्यालय, अजमेर में महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री एम एस महनोत एवं तत्कालीन उप अंचल प्रमुख श्री योगेश अग्रवाल के द्वारा वित्त वर्ष 2021–22 के प्रथम महत्वपूर्ण अभियान 'एक नई शुरुआत' का शुभारंभ किया गया।

अजमेर क्षेत्र द्वारा टीकाकरण शिविर आयोजित

दिनांक 13 मई 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, अजमेर द्वारा कोविड 19 की रोकथाम हेतु स्टाफ सदस्यों एवं उनके परिजनों के लिए टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया।

अजमेर क्षेत्र में कैदियों को बैंक पासबुक एवं वेलकम किट वितरण

केंद्रीय काराग्रह, अजमेर में श्री एस सेंगाथिर, महानिरीक्षक (काराग्रह–राजस्थान) के मुख्य आतिथ्य में आयोजित कार्यक्रम में क्षेत्रीय प्रमुख श्री एस के बिरानी के द्वारा कैदियों को बैंक पासबुक एवं वेलकम किट वितरित की गई।

अजेमर क्षेत्र की शाखाओं के डिजिटल चैम्पियंस को पुरस्कार

वित्त वर्ष 2020–21 के दौरान डिजिटल अभियानों में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु दिनांक 08 अप्रैल 2021 को शाखाओं के डिजिटल चैम्पियंस को पुरस्कृत किया गया।

अजमेर क्षेत्र द्वारा एक नयी शुरूआत अभियान का शुभारंभ

दिनांक 08.04.2021 को अंचल प्रमुख एवं महाप्रबन्धक श्री महेंद्र एस महनोत की अध्यक्षता में वित्तीय वर्ष 2021–22 में एक नयी शुरूआत थीम के अंतर्गत भरतपुर क्षेत्र की सभी शाखाओ के शाखा प्रमुख, कृषि अधिकारी एवं बैंक मित्रो के साथ मीटिंग का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र के सभी अन्नदाताओ को बैंकिंग सेवाओ से जोड़कर लाभांवित कराने का संकल्प लिया गया। उप अंचल प्रमुख श्री योगेश अग्रवाल बैठक में श्री शिवराम मीना, क्षेत्रीय प्रमुख एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री घनश्याम दास भी उपस्थित रहे।

बीकानेर क्षेत्र द्वारा स्टॉफ सदस्यों का सम्मान

एसएमई, बीकानेर में कार्यरत श्री संदीप चौधरी, वरिष्ठ प्रबंधक एवं कार्यरत अन्य स्टाफ सदस्यों द्वारा दिनांक 27.05.2021 को 12 करोड़ का ऋण स्वीकृत कर बीकानेर क्षेत्र को गौरवान्वित किया गया। इस शुभ अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख श्री योगेश यादव ने दिनांक 28.05.2021 एसएमई, बीकानेर में कार्यरत सभी स्टाफ सदस्यों को सम्मानित किया।

जोधपुर क्षेत्र में बैंककर्मियों के लिए आयोजित कोविड-19 टीकाकरण

अग्रणी बैंक की पहल पर जिला प्रशासन एवं चिकित्सा विभाग, जोधपुर के सहयोग से क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर द्वारा दिनांक 11.05.2021 से 27.05.2021 तक शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, मसूरिया, जोधपुर में जोधपुर शहर के बैंककर्मियों के लिए आयोजित कोविड–19 टीकाकरण के विशेष शिविर के दौरान क्षेत्रीय प्रमुख, श्री सुरेश चंद्र बुंटोलिया, अग्रणी जिला प्रबंधक, जोधपुर श्री राजेश अग्रवाल व अन्य कार्यपाल उपस्थित रहें।

भीलवाड़ा क्षेत्र द्वारा कृषि अधिकारियों की समीक्षा बैठक

दिनांक 05.04.2021 को श्री महेंद्र.एस.महनोत, महाप्रबन्धक, जयपुर अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में क्षेत्र की ग्रामीण तथा अर्द्ध शहरी शाखाओं के कृषि अधिकारियों व शाखाओं के शाखा प्रमुखों के साथ व्यावसायिक समीक्षा बैठक की गई। उक्त कार्यक्रम में श्री योगेश अग्रवाल उपमहाप्रबन्धक श्री राजेश कुमार सिंह क्षेत्रीय प्रमुख एवं उपमहाप्रबन्धक व श्री सुरेश कुमार खटोड़ उप क्षेत्रीय प्रमुख एवं सहायक महाप्रबन्धक उपस्थित रहे ।

जयपुर क्षेत्र द्वारा शाखा उत्कृष्टता समारोह का आयोजन

जयपुर क्षेत्र द्वारा दिनांक 03.04.2021 को वित्तीय वर्ष 2020–21 के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली शाखाओं हेतु कोविड प्रोटोकॉल के साथ उत्कृष्टता सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। शाखा टीम्स को उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्री एस के बंसल एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री विनोद मोंगा ने शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया।

जयपुर क्षेत्र द्वारा कोविड-19 वैक्सीनेशन शिविर आयोजित

कोविड–19 वैक्सीनेशन के लिए जयपुर क्षेत्र की हौम्योपैथी शाखा, जयपुर में टीकाकरण शिविर आयोजित किया गया। शिविर के दौरान शहर के विभिन्न बैंकों के कार्मिकों को टीके की पहली खुराक दी गयी।

भरतपुर क्षेत्र द्वारा मेगा वसूली शिविर आयोजित

दिनांक 22–06–2021 को क्षेत्रीय कार्यालय भरतपुर द्वारा श्री शिवराम मीना, क्षेत्रीय प्रमुख भरतपुर क्षेत्र की उपस्थिति में बीएसवीएस पर मेगा वसूली शिविर आयोजित किया गया, जिसमें ज़िले की 15 शाखाओं तथा क्षेत्र की अन्य शाखाओं में सम्बद्ध ऋणियों ने भाग लिया ।

झुंझुनूं क्षेत्र द्वारा बीमा दावे का भुगतान

झुंझुनूं क्षेत्र की बिदासर शाखा के बीमाधारक ग्राहक भानी राम की मृत्यु के उपरांत आश्रित पत्नी को क्षेत्रीय प्रमुख बी. एल. सुंडा द्वारा रू 10.50 लाख एवं रू. 50000 के बीमा दावे का चैक सौंपा गया।

भीलवाडा क्षेत्र द्वारा ग्राहक संगोष्ठी का आयोजन

दिनांक 05.04.2021 को जयपुर अंचल प्रमुख श्री एम.एस. महनोत की अध्यक्षता एवं श्री योगेश अग्रवाल, तत्कालीन उप अंचल प्रमुख व श्री राजेश कुमार सिंह उपमहाप्रबन्धक एवं क्षेत्रीय प्रमुख की उपस्थिति में ग्राहक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में बैंक के गणमान्य ग्राहकों ने भाग लिया।

जयपुर क्षेत्र द्वारा मंडी व्यापारियों हेतु ऋण वितरण शिविर

श्री दलराज सिंह धनखड़, सहायक महाप्रबंधक एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख के नेतृत्व में जयपुर क्षेत्र द्वारा मंडी व्यापारीयों हेतु ऋण वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

झुंझुनूं क्षेत्र द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन

विश्व पर्यावरण दिवस के शुभ अवसर पर दिनांक 05.06.2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, झुंझुनू एवं अग्रणी बैंक कार्यालय, झुंझुनू द्वारा बड़ौदा स्वरोजगार विकास संस्थान, झुंझुनू में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें झुंझुनू क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख एवं सहायक महाप्रबंधक श्री बनवारी लाल सुंडा, उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री सागरमल टैलर, अग्रणी जिला प्रबंधक श्री रतन लाल वर्मा, वित्तीय साक्षरता सलाहकार जी.आर.डिग्रवाल, क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारी राकेश कुमार, पवन कड़वासरा, संजय सैनी एवं बड़ौदा स्वरोजगार विकास संस्थान के स्टाफ अरुण, प्रदीप ने वृक्षारोपण किया।

भीलवाड़ा क्षेत्र द्वारा शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक का आयोजन

दिनांक 05.04.2021 को श्री महेंद्र.एस.महनोत, महाप्रबन्धक, जयपुर अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में क्षेत्र के शाखाओं के शाखा प्रमुखों के साथ व्यावसायिक समीक्षा बैठक की गई। इस दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली शाखाओं को प्रश्स्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में श्री योगेश अग्रवाल उपमहाप्रबन्धक श्री राजेश कुमार सिंह क्षेत्रीय प्रमुख एवं उपमहाप्रबन्धक व श्री सुरेश कुमार खटोड़ उप क्षेत्रीय प्रमुख एवं सहायक महाप्रबन्धक उपस्थित रहे ।

जयपुर क्षेत्र द्वारा बैंक मित्रों हेतु कार्यशाला

जयपुर क्षेत्र द्वारा बैंक मित्रों को प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया।

राजभाषा सबंधी गतिविधियाँ

बैंक नराकास जयपुर के राजभाषा अधिकारियों की ऑनलाइन बैठक

श्री योगेश अग्रवाल, उपाध्यक्ष, बैंक नराकास, जयपुर की अध्यक्षता में दिनांक 26.04.2021 को समिति द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों हेतु बैठक ऑनलाइन आयोजित की गई। उक्त बैठक में वित्तीय वर्ष 2021 में समिति के तत्वावधान में आयोजित होने वाले कार्यक्रम एवं समिति की कार्यनीति तैयार की गई ।

सवाईमाधोपुर क्षेत्र : हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

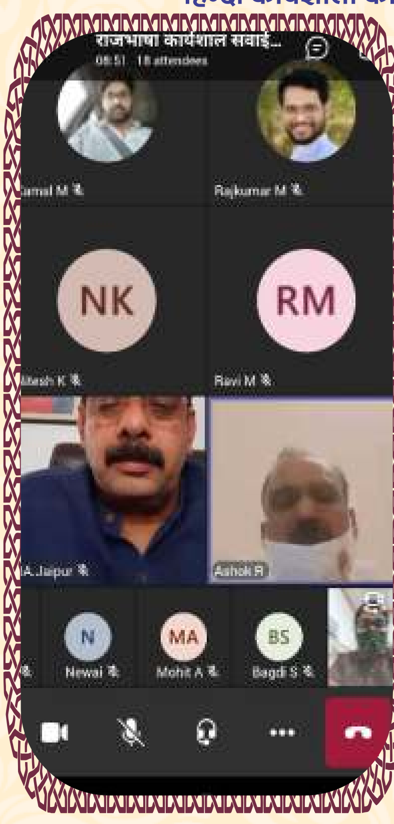

दिनांक 01/06/2021 को राजभाषा विभाग द्वारा सवाईमाधोपुर क्षेत्र की शाखाओं के 20 स्टाफ सदस्यों हेतु (अप्रैल- जून तिमाही, 2021 हेतु) हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। सत्र का उद्घाटन क्षेत्रीय प्रमुख श्री अशोक विजयवर्गीय जी द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता के रूप मे श्री सतीश चंद जिंदल, प्रमुख बड़ौदा अकादमी जयपुर द्वारा वक्तव्य दिया गया। सुश्री शिल्पा कुकरेती, वरिष्ठ प्रबन्धक, बड़ौदा एपेक्स अकादमी द्वारा राजभाषा नीति नियम, एवं तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने संबंधी सत्र लिया गया। प्रबन्धक राजभाषा श्रीमति ज्योति अग्रवाल द्वारा यूनिकोड द्वारा हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण, गूगल वॉइस द्वारा बोलकर हिन्दी टाइपिंग, पासबुक, डीडी/ बैंकर चेक की हिन्दी मे प्रविष्टि, ग्राहकों को उनकी मांग पर हिन्दी मे खाता विवरणी प्रदान करने विषयक जानकारी प्रयोगिक रूप से दी गई। इसके साथ ही दैनिक बैंकिंग कामकाज एवं पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग करने संबंधी जानकारी दी गई। इस अवसर पर नामित शाखा/ कार्यालय स्टाफ उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की तिमाही बैठक का आयोजन

दिनांक 18.06.2021 को जयपुर क्षेत्र की क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्री संतोष कुमार बंसल की अध्यक्षता में किया गया। बैठक के दौरान उप महाप्रबंधक एवं प्रमुख, राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री संजय सिंह द्वारा ग्राहकों (आंतरिक एवं बाह्य) के साथ संवाद/संबंध सुदृढ़ करने में हिन्दी का सशक्त टूल के रूप में उपयोग विषय पर विशिष्ट मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

मॉडल हिन्दी शाखा में निरीक्षण के दौरान अभिप्रेरणा कार्यक्रम एवं प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 14.06.2021 को उदयपुर क्षेत्र की मॉडल हिन्दी शाखा गोवेर्धन विलास शाखा में निरीक्षण के दौरान सभी स्टाफ सदस्यों के लिए अभिप्रेरणा कार्यक्रम एवं प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में शाखा के स्टाफ सदस्यों को राजभाषा नीति–नियम शाखा स्तरीय आंतरिक कामकाज में हिन्दी का प्रयोग, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक, हिन्दी पत्र एवं ई–मेल में बढ़ोत्तरी के विषय में अवगत करवाया गया । साथ ही स्टाफ सदस्यों को डेस्क प्रशिक्षण देते हुए यूनिकोड टाइपिंग का भीअभ्यास करवाया गया । कार्यक्रम के अंत में सभी स्टाफ सदस्यों के लिए आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी करवाया गया एवं सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

सवाईमाधोपुर क्षेत्र :
शाखाओं का राजभाषा कार्यान्वयन विषयक ई-निरीक्षण

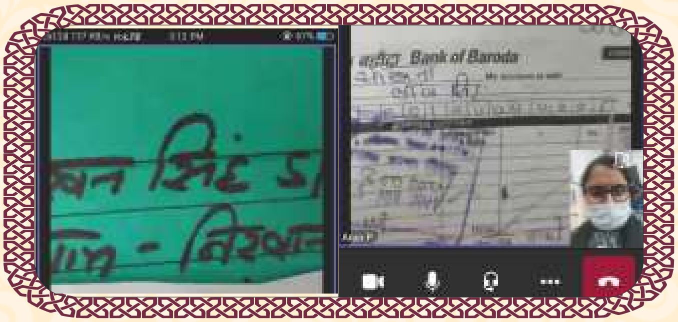

दिनांक 25/6/2021 को सवाईमाधोपुर क्षेत्र की दो शाखाओं सांखना एवं बड़ाकुआं का राजभाषा कार्यान्वयन विषयक ई–निरीक्षण प्रबन्धक, राजभाषा श्रीमति ज्योति अग्रवाल द्वारा किया गया एवं सुधार हेतु चिन्हित बिन्दुओं के संबंध मे मार्गदर्शित किया गया। कोटा क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री आलोक सिंघल एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री एम ए मेहरा द्वारा विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष मे आयोजित हिन्दी स्मृति कौशल प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

बैंक नराकास, जयपुर की प्रकाशन उपसमिति की बैठक का आयोजन

दिनांक 08.06.2021 को बैंक नराकास, जयपुर के तत्वावधान में गठित प्रकाशन उपसमिति की बैठक श्री विनोद मोंगा, तत्कालीन उप क्षेत्रीय प्रमुख, बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

उदयपुर क्षेत्र द्वारा कार्यशाला का आयोजन

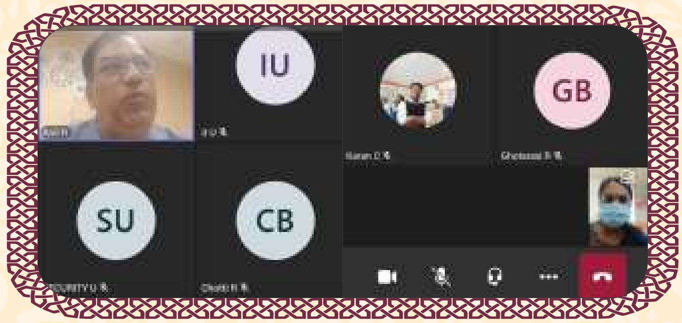

दिनांक 25.06.2021 को उदयपुर क्षेत्र की शाखाओं के स्टाफ सदस्यों हेतु कार्यशाला का आयोजन क्षेत्रीय प्रमुख एवं सहायक महाप्रबंधक श्री अनिल कुमार माहेश्वरी की उपस्थिति में किया गया जिसमें तिमाही रिपोर्ट का प्रेषण, राजभाषा नीति नियम, युनिकोड, बैंकिंग शब्दावली, हिन्दी पत्राचार आदि से संबंधी विषयों पर सत्र लिए गए।

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बांसवाड़ा की तिमाही बैठक का आयोजन

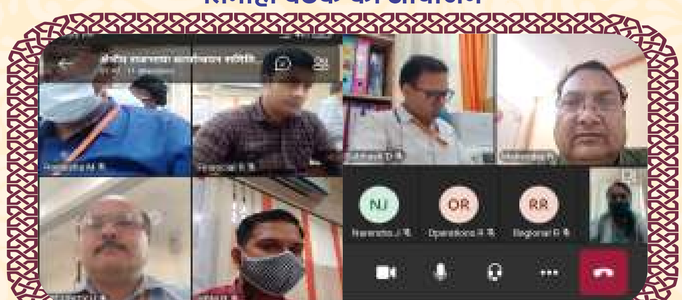

दिनांक 30.06.2021 को क्षेत्रीय कार्यालय बांसवाड़ा में क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन क्षेत्रीय प्रमुख एवं सहायक महाप्रबंधक श्री महेंद्र कुमार जैन एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री जवानमल रमेशा की उपस्थिति में किया गया। बैठक के दौरान मुख्य बिंदुओं पर चर्चा की गई। बैठक में सभी विभागाध्यक्ष उपस्थित रहे।

बांसवाड़ा क्षेत्र की छोटी सरवा शाखा का राजभाषा ई-निरीक्षण

दिनांक 29.06.2021 को क्षेत्रीय कार्यालय बांसवाड़ा के राजभाषा अधिकारी द्वारा छोटी सरवा शाखा का ई–निरीक्षण शाखा प्रमुख श्री गणेश जोरे की उपस्थिति में किया गया। निरीक्षण के साथ ही सभी स्टाफ सदस्यों हेतु अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। जिसमें राजभाषा संबंधी नीति नियम, तिमाही रिपोर्ट का प्रेषण आदि के बारे में जानकारी दी गई।

अभिरुचि : फिलैटली

फिलैटली आनन्दप्रद शौक है जो आपके सौन्दर्यपरक अभिरुचियों को तीव्र और तृप्त करता है। आपके ज्ञान के क्षेत्र का विस्तार कर आप जिस दुनिया में रहते हैं उससे परस्पर संवाद करते हुए आप राजनीति, इतिहास, प्रमुख व्यक्तियों, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं, भूगोल, पादप और जन्तु जगत, कृषि, विज्ञान, स्मारकों, सैनिकों, योद्धाओं, वैज्ञानिकों, अस्त्र एवं शस्त्र, परिवहन के माध्यमों आदि के बारे में रोचक जानकारियां प्राप्त करते हैं। सीखने की यह प्रक्रिया दृश्य–सामग्रियों और संक्षिप्त आलेखों के माध्यम से और आनन्ददायक बन जाती है। इसके अलावा, डाक–टिकट संग्रहण जानकारियों के प्रति अत्यन्त सूक्ष्म और संकेन्द्रित ध्यान दे पाने की क्षमता उत्पन्न करता है। यह आपको आयु और सीमा के परे दोस्त बनाने में भी सहायता करता है।

आरंभकों के लिए इसे और अधिक आसान तथा आकर्षक बनाने के लिए फिलैटलिविद आपको अपनी अभिरुचि के अनुसार डाक–टिकट संग्रह करने की सलाह देते हैं जिसे विषयपरक संग्रहण कहा जाता है। चुने जाने वाले विषय पुष्प, पक्षियों, पशु, वास्तुकला, रेलवे, स्मारक, रेड–क्रास आदि हो सकते है। एक विषय के रूप में नियत डाक–टिकट और स्टेशनरी भी संग्रह की जा सकती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि संग्रहण किसी कहानी की भांति किसी विषय के विभिन्न पहलुओं को प्रकट कर देता है।

डाक–टिकट स्मारक और नियत प्रकार के होते हैं। स्मारक डाक–टिकट, जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट होता है, महत्वपूर्ण घटनाओं, विभिन्न क्षेत्रों के प्रमुख व्यक्तियों, प्रकृति के पहलुओं, सुन्दर या विलुप्तप्राय पेड़–पौधे, पर्यावरणीय मुद्दों, कृषि के कार्यकलापों, राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय मामलों, खेलों आदि के स्मरण में जारी किए जाते हैं। ये डाक–टिकट केवल फिलैटली ब्यूरो और काउंटरों में या फिलैटली जमा खाता स्कीम़ के तहत मिलते हैं। इनका मुद्रण सीमित मात्रा में होता है।

मुझे डाक टिकट संग्रह (फिलेटली) में रूचि कक्षा 10 से आयी जब एक व्यक्तिगत विदेशी डाक बहरीन से प्राप्त हुई और मेरी रुचि बढ़ती गई। सन 1989 में बैंक सेवा में आने के पश्चात जो डाक प्राप्त होती थी तथा अपने मित्रों से इकट्ठा करना प्रारंभ किया।

सन् 1991 में बैंक में एक अधिकारी मित्र जो कि पूर्व में डाकघर में कार्यरत थे, उन्होंने मेरी रुचि देखकर कुछ मूल्यवान टिकट दिये। सन 2000 में मैंने जयपुर जी पी ओ में फिलेटली ब्यूरो में पी डी एकाउंट खुलवाया जिसमें समय–समय पर राशि भिजवाने से नवीन जारी किये जाने वाले टिकट, मिनिएचर शीट, प्रथम आवरण दिवस लिफाफे, स्मारक/विशेष डाक टिकट, रिक्त प्रथम दिवस आवरण तथा ब्राउचर डाक द्वारा घर पर ही प्राप्त हो जाते हैं। अभी वर्तमान में लगभग 5000 विभिन्न डाक टिकट मेरे संग्रह में मौजूद हैं।

इस हेतु कोटा, जयपुर, बेंगलुरु एवं नेपाल के जनरल पोस्ट ऑफिस से भी डाक टिकट खरीदें है। इनमें से मेरी पसंद के कुछ टिकट हैं जिनमें सन 1976 में जारी 25 पैसे के डाक टिकट पर वंदे मातरम गीत तथा सन 1978 में जारी 25 पैसे के डाक टिकट पर लाल एवं स्वर्ण रंग की स्याही में भगवद्गीता का श्लोक **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन** अंकित है।

इसके अलावा अन्य विभिन्न विषयों से सम्बंधित डाक टिकट मेरे संग्रहण में मौजूद है जिनमें **हमारे बैंक के संस्थापक महाराजा सर सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय पर जारी प्रथम दिवस आवरण भी शामिल है।** विदेशी डाक टिकटों में रोम, मंगोलिया, यू एस ए, ओमान, बहरीन, नेपाल, पाकिस्तान, नीदरलैंड एवं इंग्लैंड आदि कई देशों के टिकट संग्रह किए गए हैं।

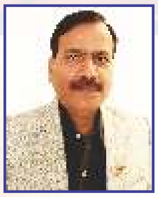

(श्री अनिल कुमार)
शाखा प्रमुख, पीठ शाखा
बांसवाड़ा क्षेत्र

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
विजया VIJAYA | देना DENA

अब जुड़ जाएं हमसे व्हाट्सएप पर !

विभिन्न बैंकिंग सेवाओं के आसान उपयोग के लिए हमसे चैट करें.

- शेष राशि पूछताछ
- संक्षिप्त विवरणी
- चेक बुक अनुरोध
- चेक स्थिति
- डेबिट कार्ड ब्लॉक करना
- ऑफर्स एवं अन्य आकर्षण

टोल फ्री नंबर पर कॉल करें (24x7): 1800 258 44 55 | 1800 102 44 55 | www.bankofbaroda.in | हमें फॉलो करें

मुद्रक : प्रिन्ट-ओ-प्रिन्ट, जयपुर ● मो.: 9414043784